आरोग्य दाता देशी गाय

लेखक :
मनसुख सुवागीया
जलक्रांति एवं गीर गाय क्रांति के प्रणेता
एम.डी.–फ्लोटेक पंप

मूल्य रुपये–10

अंगुलि निर्देश :

जलक्रांति, गीर गाय क्रांति, गाय आधारित कृषि एवं गोवेद राष्ट्र के चरणो मे समर्पित करनेवाले मनसुखभाई सुवागीया एवं जलक्रांति ट्रस्ट के असंख्य लोगों की १५ साल की तपस्या से यह साहित्य तैयार हुआ है। स्वप्रसिद्धि के लिये ऊनका अपने नाम से उपयोग करना गेरकानूनि एवं पाप है, गोसेवा नही है ।

प्रकाशक :– **जलक्रांति ट्रस्ट**
C/O. फ्लोटेक इंजीनियरिंग प्रा. लि.
शापर मेईन रोड, मु.–शापर (वेरावल), जि.राजकोट (गुजरात)
फोन– (02827) 252509,253309
Website: www.flotech.in | E-mail: info@flotech.in
Website: www.jalkranti.org | E-mail: info@jalkranti.org

प्राप्ति स्थान : **कोन्टेक एड**
७/११, भक्तिनगर स्टेशन प्लोट, राजकोट–२
फोन: ०२८१–२४६११४२, ०९४२७२ ७०२३१

।। राम।।

स्नेही श्री मनसुखभाई सुवागीयाने जलसेवा, कृषिसेवा और अत्यंत संनिष्ठ प्रयोग द्वारा गोसेवा की दीक्षा ली है । यह जानकर, देखकर, साधु के नाते आनंद हो यह सहज हैं । उनका 'गोवेद' ग्रंथ गोपूजा ग्रंथ का रूप धारण करे ऐसी शुभभावना अस्थान पर नहीं गिनी जायेगी, मेरी प्रसन्नता एवं प्रभुप्रार्थना–रामस्मरण के साथ ।

मोरारिबापू
चित्रकूट धाम–तलगाजरडा.
ता. १२–०९–२०११

भारत स्वाभिमान यात्रा – पतंजलि योगपीठ – हरिद्वार
दिनांक : ६–९–२०१०

जूनागढ जिले के जामका गाँव में चेकडेम योजना से जलक्रांति, हर घर में गीर गाय योजना से गोक्रांति एवं गाय आधारित कृषि योजना से कृषिक्रांति का आज हमने दर्शन किया । सरकार की सहायता के बिना श्रमदान से बहुत कम खर्च में साकार हुई ये योजनायें एक नया इतिहास है । जामका गाँव से देश एवं दुनिया को बहुत कुछ सिखने को मिला है । ये तीन योजनाओं के प्रणेता मनसुखभाई सुवागीया, जामका गाँव के पुरुषोत्तमभाई एवं ग्रामजनों को मेरा साधुवाद है ।

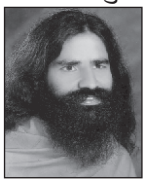

योगऋषि स्वामी रामदेवजी

जूनागढ़ कृषि युनिवर्सिटी के कृषि संशोधन केन्द्र, तरघडिया, ता.जि.–राजकोट में हमने बारह साल पहले फ्लोटेक पंपसेट लगाया है । जो एक भी फोल्ट बिना या एक बारभी बोर में से बाहार निकाले बिना आज भी अविरत कार्यरत है ।

डॉ. बी. बी. काबरिया
संयुक्त संशोधन वैज्ञानिक, तरघडिया
मो.: 093742 02518

मेरे ८०० एकड़ के फार्म में फ्लोटेक के ४० पंप कार्यरत है । पहले हम कोइम्बतूर की नामी कंपनी के महँगे पंप इस्तेमाल करते थे । जिसमें २० हो.पा. के पंप से ड्रिप में केले के ६ हजार पौधों की सिंचाई होती थी । अभी 15 हो.पा. फ्लोटेक पंप से १० हजार पौधों की सिंचाई होती है । फ्लोटेक पंप बिजली बचत के साथ बिना वेरन्टेज से बरसों तक कार्यरत रहता है । ऐसा हमारे प्रदेश के हजारों किसानों का अनुभव है ।

जितेन्द्र पाटील – निंबोल (रावेर)
जि.– जलगाँव, (महाराष्ट्र)
मो.: 098222 43869

उद्योग हमारी राष्ट्रभक्ति

१. कंपनी द्वारा पाँच वर्ष में **120** किसान संमेलन से जलरक्षा–गोरक्षा–कृषिविकास की देश के हजारो गाँव को प्ररणा ।
२. कंपनी द्वारा **4** लाख **आरोग्य दाता देशी गाय** पुस्तिका अर्पण।
३. **250** व्यक्ति का व्यसनमुक्त स्टाफ ।
४. पंप रीपेरिंग के लिए आनेवाले किसानों के लिए किसानकुटीर और महेमान नवाजी ।
५. बिना प्रोफिट से पुराने पंप का रिपेरिंग करने वाली देश की एक मात्र कंपनी।
६. जलरक्षा–गोरक्षा कृषिसेवा–राष्ट्रसेवा में कंपनीका योगदान ।
७. उद्योग सिर्फ धन कमाने का धंधा नहीं है, लेकिन राष्ट्रभक्ति का कर्मयोग है । ऐसी देश–विश्व के उद्योगजगत को फ्लोटेक की प्रेरणा ।
८. हर साल १००० विद्यार्थीओं को कंपनी में नि:शूल्क तालिम ।

भारत कें कोई भी प्रदेश के गाँव, गौशाला, संस्थान देशी गोवंशरक्षा, देशी गाय आधारित कृषि एवं जलरक्षा के लिये प्रतिबद्ध होगा, तो हम जरुरी मार्गदर्शन करेंगे ।

मनसुखभाई सुवागीया - एम.डी.-फ्लोटेक पंप

मनसुखभाई सुवागीया का देश को योगदान

१) ५ सिद्धांत की नयी चेकडेम, तालाब योजना से देश को **जलक्रान्ति** का प्रदान किया । सरकारी सहाय बीना ग्रामजनो के श्रमदान, लोकफंड से १००० चेकडेम–तालाब बनाने वाले मनसुखभाई देश–विश्व के प्रथम व्यक्ति है। कुल ३००० चेकडेम–तालाब बनायें है । ३००० पूरानी खदानो में बरसाती पानी रिचार्ज किया ।

२) लुप्त हो रहे देशी गोवंश की सुरक्षा, उन्नति, आबादी की १४ कामधेनु सूत्र की देश में पहली नयी योजना बनाकर **गीर गाय क्रान्ति** का प्रदान किया । ५००० गाँवो मे और १५ राज्यों में आँगन में देशी गोपालन संवर्धन शुरू करवाया ।

३) **देशी गाय आधारित कृषि** योजना बनायी । १०० गाँवो मे सफल परिणाम प्राप्त किये ।

४) **गोवेद** ग्रंथ की रचना की ।

५) १०० उत्तम नस्ल के देशी आम के पेडों की प्रजाति की रक्षा की ।

६) ५००० युवानों को व्यसनमुक्त किया ।

७) युवावस्था के १५ साल राष्ट्र को समर्पित करके देश के ३००० से ज्यादा गाँवों–नगरो में जाकर करोडो लोगों की आत्मजागृति करके इन योजनाओं को साकार किया तथा लोगों को देशी गाय के दूध, घी, छाछ के आहार की प्रेरणा दी ।

जलक्रांति ट्रस्ट–राजकोट

रोगों के कारण : तंबाकू–शराब जैसे नशीले पदार्थों का व्यसन, फल, सागभाजी, अन्न में जंतुनाशक विष और रसायण, मैदा, तले हुए पदार्थ, रात को खट्टे पदार्थ, फास्टफूड एवं रंगरसायणवाले पदार्थ, पेप्सी, कोकाकोला, जैसे विषैल पीने, भेंस और विदेशी जर्सी प्राणी के दूध, घी, छाछ, बिना भूख चाहे तब और जरूरत से अधिक खाना, विरुद्ध आहार, परिश्रम का अभाव, देर से सोना, देर से उठना तथा कुपोषण ये रोग, शारीरिक कंगालियत, मोटापा, अशक्ति, नपुंसकता, निर्बल वंश, अकाल वृद्धत्व और अकाल मौत के कारण हैं । अतिशय काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, भय तथा निराशा भी शरीर, मन के रोगों के प्रबल कारण हैं । इन भूलो से आरोग्य, शक्ति, यौवन, दाँत एवं शरीर का सौन्दर्य और आयु का दुर्व्यय करना आनंद नहीं किन्तु अधोगति है। माता–पिता के व्यसन और आहार–विहार की अज्ञानता से गर्भस्थ शिशु या बालक कंगाल एवं रोगी हो जाये यह बालक, राष्ट्र एवं ईश्वर का अक्षम्य अपराध हैं ।

हे भारतवासीयो जागो, आहार–विहार का उचित ज्ञान प्राप्त करें । क्योंकि यह जीवन का सबसे बुनियादी ज्ञान है और मन की शुद्धता एवं समता यह नींव का अध्यात्म है ।

आँगन में उत्तम औलाद की देशी गाय से आरोग्य, शक्ति, उत्तम वंश, ऐश्वर्य एवं ब्रह्मानंद की प्राप्ति होती है ।

देशी गाय के दूध के ऐतिहासिक प्रमाण

(१) **रघुकुल** में गाय की वजह से पुत्र प्राप्ति होती है। धुंधुमार को 'गोकर्ण' पुत्र प्राप्त हुआ। संतानरहित दिलीप को वशिष्ठ ऋषि की नंदिनी गाय के दूध–घी के सेवन से पुत्र **रघु** प्राप्त हुआ । उसी प्रकार दशरथ राजा के यहाँ प्रौढावस्था में गाय की वजह से चार पुत्रों की प्राप्ति होती है। गाय से जगत को **राम** एवं **रामायण** की उपलब्धि हो सकी है।

(२) बचपन से ही **श्रीकृष्ण** गाय के दूध, दही एवं मक्खन खाते हैं। बचपन से ही व्रजभूमि का नेतृत्व करते हैं। मथुरा मकखन बेचने जानेवाली गोपियों का मक्खन लूट कर व्रज के बालकों को खिलाकर वे जगत को संदेश देते हैं कि, 'बच्चों को गाय के दूध–मक्खन खिलाने चाहिये ।' आजीवन स्वयं गायों का पालन कर, भरपूर मात्रा में गाय के ही दूध–मक्खन खानेवाले श्री कृष्ण शरीर–मन–ज्ञान–हृदय और आत्मा से दिव्य महापुरुष के रूप में विश्व में प्रतिष्ठा पा सके। उनकी दिव्यता से आकर्षित होकर कुलीन आठ कन्याएँ स्वैच्छिक रूपसे श्रीकृष्ण के साथ विवाह करती हैं। श्रीकृष्ण उत्तम संतानो के पिता बनते हैं। १२५ साल का निरोगी जीवन जीकर द्वारिका से २५० की.मी. पैदल प्रभासतीर्थ जाकर प्राणत्याग करते है । ऐसी जीवनशक्ति–प्राणशक्ति–दिव्यता श्रीकृष्ण को देशी गाय के दूध–मक्खन–दही–छाछ की वजह से ही प्राप्त हुई थी ।

(३) इ.स. की आठवीं शताब्दी में कच्छ में **लाखा धुरारा** नाम का राजा हो गया। यौवन में उसके शरीर में इतना प्रचंड बल था कि गाँव के सामने एक टेकरी पर बरगद (वड) का पेड था । वहाँ अपने धोडे को दौडाकर वह जाता और घोडे को अपने पैरों के बीच उठाकर उस पेड की शाखा को पकड कर झूला खाता । छह महीने की बछडी को उठाकर खेलनेवाली पालिताणा के गोहिलराज की १४ सालकी चंदाकुमारी ९० साल के लाखा के साथ ब्याह करने की प्रतिज्ञा लेती है। उस वक्त लाखा मरण शय्या पर था। चतुर कन्या दूध देनेवाली नौ गायों को लेती है। पहली गाय को दुह कर उसका दूध दूसरी गाय को पिलाती है। दूसरी गाय का दूध तीसरी गाय को इस प्रकार आठवीं गाय का दूध नौवी गाय को पिलाती है। और नौवी गाय का दिनभर का दूध लाखा को पिलाती है। गाय के दूध के इस प्रकार के सिद्ध प्रयोग से लाखा के शरीर पर काले रोंगटे, सर पर काले बाल, आँख–चमडी में तेजस्विता के साथ नवयौवन प्राप्त होता है और लाखा ९० साल की उम्र में पुन: टेकरी पर घोडे को दौडा कर बरगद के पेड की शाखा (जटा) को पकड कर घोडे के साथ झूला खाता है ! तदपश्चात् चंदारानी के साथ–संसार शुरू करता है और चार प्रतापी पुत्रों का पिता बनता है। उनमें से पुत्र उनडजाम प्रतापी–कुशल राजा के रूप में इतिहास में अपना स्थान प्राप्त करता है।

देशी गाय के दूध से ये सुवर्ण ईतिहास बना ।

(४) भारत को प्रथम विश्व कप दिलानेवाले कपिलदेव की, केवल १४ साल की उम्र में, उसकी बोलिग में प्रतिभा का दर्शन होता है। उसकी प्रतिभा को देखकर उसके पिता दो देशी गायों को लाते है। प्रतिदिन दो–तीना लिटर–दूध–कपिलदेव पीता है । कपिल देव की बॅटिंग–बॉलिंग प्रतिभा विश्वविख्यात बनती है। विशेषता यह है कि १६ सालो में लगातार १३१ टेस्ट एवं २२५ एक दिवसीय मेचों में खेलने में कभी भी कपिलदेव को बीमारी, कमजोरी, थकान, स्नायुदर्द या अस्थिभंग की कोई तकलीफ नहीं हुई है या एक बार भी उसकी खेल क्रिया में ब्रेक नहीं आयी है ।

(५) **मसाई प्रजा :** अफ्रिका खंड के केन्या एवं टान्झानिया देशों में मसाई प्रजा परंपरा से पीठ पर डिल्लेवाली (भारतीय गायों जैसी) गायों का पालन करती है । दैनिक दो से तीन लिटर दूध पीती है । पूरी प्रजा पतली, ऊँची, तेजस्वी, नीरोगी एवं विश्व की बहादुर प्रजा है । दुनिया सिंह (शेर) से डरती है, जब कि मसाई को देखकर शेर दुम दबाकर भागता है । स्वातंत्र्य के पूर्व काल में शेर का भाले से शिकार करने के बाद ही १८ साल के मसाई युवक के विवाह की प्रथा थी । पूरी प्रजा एक ही श्वास में १० से २० किलोमिटर दौड सकती है । मसाई प्रजा में किसी को डायाबिटीस, मेदस्विता, हृदयरोग, कोलेस्टेरोल, संधि–रोग, आँख पर चश्मे या वंध्यत्व नहीं है। प्रजा की कामशक्ति एवं शारीरिक

तेजस्विता प्रचंड है और ८० से ११० वर्ष नीरोगी जीवन जीती है । हमने यह सब केन्या जाकर देखा है और जाना है ।

इतिहास, भारत की गोपालक प्रजा और मसाई प्रजा का अभ्यास करने के पश्चात् हमारा निष्कर्ष है की पीठ पर डिल्ले (कांध–खांद) वाली गाय मानवशरीर को श्रेष्ठ ऊँचाई सुडोल पतला नीरोगी शरीर, बुद्धि की श्रेष्ठ तेजस्विता, सिंह को पराजित करने का मनोबल, पूर्ण यौवन, उत्तमवंश एवं शतायु प्रदान करती है । अत: पीठ पर डिल्लेवाली देशी गाय यथार्थ रीत से विश्वमाता है।

पृथ्वी पर सबसे बडा पाप क्या है ?
देशी गायमाता का वर्णसंकरण !

हमारा गाय आधारित जीवन : परंपरा से हम आँगन में उत्तम औलाद की देशी गाय का पालन करते हैं। उषाकाल (रामप्रहर) में २० ग्राम घी या मक्खन में ५ ग्राम गुड एवं २ ग्राम सोंठ मिला के हलका गरम करके पीता हुँ । दांतुन करके, एक घंटे तक योग व्यायाम करता हूँ। सुबह के नास्ते में देशी गाय का ताज दही या छाछ पीता हुँ । बचपन में सुबह भाखर, रोटी के साथ दही–मक्खन खूब खाया है। शीतऋतु में सुबह में गाय के घी–मक्खन में देशी गुड और जरासी सोंठ डालकर बचपन से आज तक खाने का ब्रह्मानंद लिया है। दोपहर के भोजन में हमेशा गाय की छाछ या दही लेता हूँ । शाम को सादे भोजन के साथ ४०० ग्राम गाय का दूध लेता हूँ। सोते समय १० ग्राम देशी गाय का घी, ५ ग्राम शहद,

५ ग्राम त्रिफला मिलाकर लेता हूँ । ये प्रयोग से मानव को चिर यौवन एवं शतायु प्राप्त होती है । आयुर्वेद के हजारों वर्षों के सफल सिद्धान्तानुसार उषाकाल में घी–मक्खन, सूबह में ताजा दही–छाछ, दोपहर छाछ, शामको भोजन में दूध एवं रात को सोते समय गरम दूध अमृत समान है। हमारे परिवार की यह आहार प्रथा का उत्तम परिणाम हमे मिला हैं। अनंत काल से चली आती हुई यह भारतीय आहार परंपरा है। फेक्टरी में १० देशी गाय पालते है । आँगन में एवं खेत में विषैले रसायणों से मुक्त गाय के गोबर–गोमूत्र से उगाये गये सागभाजी–फल–अनाज–मसाले खाते हैं।

शहरों में तथा गाँवो में सुबह में दही–मक्खन–घी को छोडकर मैदा एवं तले हुए पदार्थों खाने की कुप्रथा पैठी है । यही शारीरिक कमजोरी, एसिडिटी, कब्ज, वातरोग, मोटापा, चमडी के रोग, गर्मी, नपुंसकता, पेट में दाह आदि रोगों का मूल कारण हैं। किसानों की संतानें गाय के दही–मक्खन–घी को भूल जाये, यह अभिशाप है । खेतों में मनमानी रीति से रासायणिक खाद–विष डालने वाले एवं सामाजिक धार्मिक प्रसंगो में अपनी ओकात से बाहर खर्च करनेवाले लोग अपनी संतानों को मुक्त रीति से गाय के दूध–दही–मक्खन न खिलाये वे माँ–बाप संतानद्रोही एवं देशद्रोही हैं । संतानों को बचपन से ही आरोग्य, बल एवं प्राणशक्ति के दाता आहार से आदी करनी चाहिये । बाजार में बिकनेवाले हानिकारक पदार्थों से दूर रखना यही सच्चा संतानधर्म तथा राष्ट्रधर्म भी है । **मैदा को जहर समजकर त्यागे।** सुबह के नाश्ते एवं भोजन में से तले हुए तथा मैदा के पदार्थों को बिलकुल दूर करें। एवं देशी

गाय का दूध, घी, दही, मक्खन अपनाये । शाम को जब भूख न लगी हो, तब भोजन लेना टाल कर अदरकयुक्त गरम दूध पीने से पेट के रोग, कब्ज, पित्त, वायु, सरदर्द, नहीं होते यदि उनका अस्तित्व हो तो मिट जाते हैं और शरीर को उत्तम पोषण एवं बल मिलते हैं ।

ऋतु–ऋतु के फल प्रसन्नता से खाते हैं। रात को सोते समय नमक से अचूक दांतो को साफ करने के बाद ही सोना यही परिवार का नियम है । बचपन में अतिशय आमातिसार (मरडो) के कारण कायमी नाजुक पेट, होने पर भी ७५ वर्ष तक यौवन एवं १०० वर्ष की तंदुरस्त–कार्यरत जिंदगी का हमारा संकल्प है । बचपन से ही शरीर को नीरोगी–सशक्त रखने की देखभाल ली है । आरोग्य, शक्ति, उत्साह, महापुरुषार्थ, अचल श्रद्धा और दिग्विजय के फुहारे तन–मन में से निरंतर छुटते रहते है। सकल जगत के सत्त्व के साथ संवेदना एवं एकत्वभाव का झरना हृदय में अविरत बहता रहता है । मुझे लगता है कि आरोग्य, शक्ति, यौवन और आयु का वही मूल स्त्रोत है, जो उत्तम आहार विहार का भी प्रेरक है ।

गाय का घी ज़रा गरम करके हमेशा उंगली की नोक से सर के तालु में धीरे धीरे पाँच मिनट मालिश करता हूँ ताकि बाल बिलकुल झडते नहीं ! मस्तक में गाय का घी डालने से बाल झडते एवं अकाल सफेद होते नहीं, और नींद भी अच्छी आती है । जरा गरम घी में उंगली डूबोकर नथुनों में लगा देने से एलर्जी या वायरसजन्य शर्दी में चमत्कारिक फायदा होता है। और रात में नथुनाँ में से आती

धृणाजनक आवाज़ की समस्या में से राहत मिलती है । हाथ–पैर–चेहरे पर विदेशी क्रीम के स्थान पर ज़रा गरम गाय का घी लगाता हूँ। अत: त्वचा खूब मुलायम एवं चमकदार रहती है । तमाम सामाजिक–धार्मिक प्रसंगों में और हमारी फ्लोटेक पंप की कंपनी के किसान संमेलनों में गाय के घी की एवं रंग–रसायण रहित देशी गुड की मीठाई परोसी जाती है । खाद्य पदार्थों में केन्सर और असंख्य रोगों को जन्म देनेवाले नींबु के फूल, रंग, रसायण का उपयोग नहीं किया जाता । क्योंकि यह शरीर आत्मा का मंदिर है और अतिथि देव है । घर–उद्योग एवं प्रसंगों में विषैले ठंडे पीने एवं तंबाकू का निषेध है ।

हे भारतवासीयो ! देशी गाय के दूध, दही, घी, मक्खन, छाछ, ऋतु ऋतु के फल एवं जंतुनाशक विषैले रसायणरहित सागभाजी, अनाज, मसाला धरती के अमृत हैं । जिन्हे खा कर आरोग्य, शक्ति, उत्तमवंश एवं ब्रह्मानंद की प्राप्ति करें । देशी गाय के द्वारा प्राणशक्ति प्राप्त करें । क्योंकि प्राणवान प्रजा ही सुवर्णभूमि भारत का उज्जवल भविष्य है ।

उत्तम प्रजा : उत्तम जीवन की आराधक होती है ।
उत्तम औलाद की देशी गायों की पालक होती है ।
उत्तम वंश की जनक होती है ।
महान राष्ट्र की निर्माता होती है ।
यही प्रजा, परमात्मा की उत्तम संतान है ।

गाय के दूध, घी अमृत हैं... क्यों ?

हमारा सर्वेक्षण : गत १५ वर्षों में ३००० से अधिक गाँव एवं १०० से अधिक नगरों के लोगों के आरोग्य का गहराई से सर्वेक्षण करने के बाद हमारा निष्कर्ष है कि जो प्रजा देशी गाय के दूध, घी, छाछ परंपरा से खाती है, वह प्रजा सबसे अधिक शक्तिशाली, नीरोगी, यौवनशाली, प्रचंडकामशक्तिवाली, आरोग्यवान एवं संततिवाली है । इस प्रजा में हृदयरोग, केन्सर, डायाबिटीस, घुटन दर्द मोटापा, वातव्याधि, श्वास, कुष्ठ, चमडी के रोग, या चश्मा कहीं भी देखने मिले नहीं हैं । साथ साथ गाय के दूध, घी, एवं गोमूत्र से हजारो लोगों के रोग मिट गये हों ऐसे उदाहरण अपने आप देखें हैं । जब कि भेंस एवं विदेशी जर्सी के दूध, घी, छाछ खानेवाले लोगो में हृदयरोग, डायाबिटीस, कोलेस्टेरोल, मोटे मेदस्वी शरीर, मोटी एवं निस्तेज त्वचा, शर्दी, श्वास एवं बच्चो में आँखो के कम तेज का प्रमाण अत्यंत बडे पैमाने पर देखने को मिला है । जब कि गाँव और नगरों के गरीब मजदूर एवं श्रमिक जो गायें रखते नहीं और गरीबी की वजह से दूध, घी खा नहीं सकते, उन प्रजाजनों के शरीर कमजोर, फीके, बलहीन, अल्प कामशक्तिवाले एवं छोटे कदवाले होते हैं । आँखें गहरी पैठी हुई और चमकरहित होती हैं। इस प्रजा में पूर्ण यौवन आता ही नहीं । और जलदी से वृद्ध हो जाती है । इस प्रजा के बच्चे, युवक और वृद्ध देखने पर ही अन्यों से अलग दिखाई देते हैं।

देशी गाय द्वारा हानिकारक क्षार एवं विषों से मुक्ति :

सौराष्ट्र प्रांत के लाठी–लीलिया तहेसिल के गाँवो के भूतल में देश में सबसे अधिक फ्लोराइड एवं क्षारयुक्त पानी है । इस प्रदेश में ५० गाँवो का सर्वेक्षण करने पर मालूम हुआ हैं, की जो किसान, श्रमिक, व्यापारी या नौकरी करनेवाले लोग भेंस के दूध, घी, छाछ खाते हैं, उस प्रजा में प्राय: लोगों को क्षारवाला पानी पीने से ४० साल की उम्र में ही घूटन एवं शरीर की वातव्याधि हो जाती है। प्राय: ऐसे लोग पैरों को मोडकर बैठ भी नहीं सकते । ४० साल की उम्र में त्वचा निस्तेज हो जाती है । और वृद्धत्व दिखाई देने लगता है। इस प्रजा में डायाबिटीस, हृदयरोग तथा किडनी के रोगों की मात्रा अधिक दिखाई देती है । जब कि इसी प्रदेश में परंपरा से देशी गायों को पालनेवाले एवं गाय के दूध, घी, छाछ खानेवाले गोपालक प्रजा में उपर्युक्त कोई शारीरिक तकलीफ देखने में आयी नहीं है । इस से फलित होता है कि देशी गाय के दूध, घी, छाछ, दही, मक्खन का आहार हवा, पानी और खुराक से प्रवेश करनेवाले फ्लोराइड जैसे हानिकारक क्षार, जंतुनाशक दवाइयों के विष एवं केमिकलो को मानवशरीर में जमा नहीं होने देते और उनके प्रवेश पर रोक लगा देते है । और यदि जमा हो भी गये हों तो उनको मिटाकर मानव को प्रदूषित वातावरण में भी नीरोगी रखते है ।

कामधेनु देशी गाय : राजस्थान, म.प्र., महाराष्ट्र, छत्तिसगढ, उत्तर–पूर्व भारत के ५०० से अधिक गाँवो में हमने स्वयं जाकर सर्वेक्षण किया कि यहाँ की राठी, थरपारकर, मालवी, निमाडी, गाँवलाव,खिल्लार, कौशला एवं पहाडी देशी गायों का पालन करनेवाले गोपालक प्रजा के हजारों परिवारो में किसी को केन्सर, हृदयरोग, श्वास, आँखो के चश्मे, अधिक मेद, डायाबिटीस, संधिवात का दर्द, वातव्याधि, कमजोरी से वंध्यत्व, कुष्ठ या त्वचा के रोग बिलकुल नहीं है । देशी गाय के दूध, घी, छाछ खानेवाली प्रजा श्रम, चलने, दौडने में भी शक्तिशाली मालूम होती है । लोग परंपरा से मानते हैं कि देशी गाय के दूध, दही, छाछ राजस्थान की आग जैसी गर्मी के सामने प्रतिकारक शक्ति प्रदान करते हैं और भेंस के दूध, घी से गर्मी अधिक महसूस होती है । भेंस एवं विदेशी जर्सी के दूध, घी, छाछ पीनेवाली उत्तर–मध्य गुजरात की प्रजा में उपर्युक्त रोग बडे पैमाने पर गाँव–गाँव में दिखाई देते हैं। इस प्रकार के असंख्य स्वयं किये गये परीक्षणों से सिद्ध होता है कि पीठ पर डिल्ले (कांध–खांद) वाली भारत की तमाम देशी गायों के दूध, घी, मक्खन, दही, छाछ मानव के शरीर, मन, बुद्धि एवं हृदय को श्रेष्ठ आरोग्य तथा प्राणशक्ति और उत्तमवंश प्रदान करते हैं। देशी गाय का गोमूत्र सचमुच पृथ्वी पर की संजीवनी है । देशी गाय के गोबर–गोमूत्र से कृषि में उत्पादन वृद्धि और फल–सागभाजी, मसाला, अन्न की अद्‌भुत मिठास और सुगंध के सफल परिणाम १०० से अधिक गाँवो में स्वयम् देखे हैं । अत: देशी गाय सचमुच मानव की माता और कृषि की कामधेनु है ।

पंचगोसत्त्व-सृष्टि का अर्क याने अमृत : तमाम जीवों के पोषण का मूलाधार वनस्पति है । गाय अनेक प्रकार की खाद्य एवं पोषक वनस्पतियों तथा औषधीय वनस्पतियो के पान, डालियाँ, बीज, फूल, दाने एवं कंदमूल खाकर अपनी ४ से ५ दिन की पाचन क्रिया से उस में से दूध बनाती है । जर्सी की अंतडी ११५ फीट, भेंस की ९० फीट, विश्व में सबसे लंबी १६० फीट की अंतडी देशी गाय की हमने खूद नापी है । अत: देशी गाय की पाचनक्रिया भी सबसे लंबी है । अत: गाय के दूध में मौजूद पोषक तत्त्व सबसे सुपाच्य हैं । ये वनस्पतियाँ मानव के लिए प्रत्यक्ष रूप में लगभग अपथ्य होती हैं। उसी वजह से मानव प्रत्यक्ष रूप में उन वनस्पतियो के पोषण या औषधीय लाभ उठा सकते नहीं । गाय इन वनस्पतियो को पचाकर उस में सुवर्णतत्त्व मिश्रित कर मानव के लिये सुपाच्य एवं अमृत समान दूध तथा संजीवनीरूप औषध 'गोमूत्र' बनाती है। सुवर्णतत्त्व, ८ वसु (प्रकृतितत्त्व), ११ रुद्र (प्राणतत्त्व, प्राणशक्ति), १२ सूर्यशक्ति (तेजतत्त्व) की दिव्य ऊर्जा होने से देशी गाय का दूध, दही, घी, गोमूत्र एवं गोबर सकल सृष्टि का अर्क या अमृत है ।

आयुर्वेद और विज्ञान के मतानुसार देशी गाय के दूध के अमूल्य गुण : सूर्य में से आनेवाली एक किरण अपनी पीठ पर डिल्ले (कांध, खांद) वाली देशी गाय के शरीर में प्रवेश करती है। अत: देशी गाय के ६० लिटर दूध में १ ग्राम सुवर्णतत्त्व रहता है । अत: देशी गाय के मक्खन, घी का रंग सुनहरा रहता है । ये सुवर्ण

शरीर की तेजस्विता (ओजस) शुक्राणु एवं स्त्रीबीज की शक्ति में वृद्धि करनेवाला तथा कफजन्य रोगो को मिटा देनेवाला है ।

विज्ञान ने खोज निकाला है कि यदि तेल–घी में ३% ट्रान्सफेटिक एसिड हो तो वह मानव शरीर के लिये हानिकारक है । प्रयोगशाला के टेस्ट रीपोर्ट में देशी गाय के घी में ट्रान्सफेटिक एसिड १.५% रहता है, भेंस एवं विदेशी होलस्टिन/जर्सी/संकर काउ के घी में ४% और तेल में ४.५% मालूम पडा है । इस कारण से भेंस एवं जर्सी का घी और तेल हृदयरोग करनेवाले हैं । इसके अलावा गाय के घी में सोडियम ११.०७ पीपीएम, केलिश्यम ७.३५ पीपीएम, विटामिन 'ए' ६७.६३ पीपीएम मालूम पडे हैं । देशी गाय के घी में स्थित केल्शियम, सोडियम, विटामीन 'ए' हड्डियाँ, दाँतो, आँखो को मजबूत रखते है । यदि शरीर में सोडियम की कमी लंबे समय तक रहे तो केन्सर होने की संभावना रहती है । इस प्रकार देशी गाय के दूध, घी केन्सर तथा हृदयरोग के सामने प्रतिकारशक्ति प्रदान करने वाले हैं।

देशी गाय को मानव की भाँति ही खूब पसीना होता है अत: उसका शरीर शुद्ध रहने पर दूध भी शुद्ध रहता है । जबकी भेंस, जर्सी काउ, भेड–बकरों को अत्यंत अल्प पसीना होता है । अत: खुराक में आनेवाली अशुद्धि इन प्राणियों के दूध में अधिक रहती है ।

सावधानी : आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार दूध के साथ मूली, प्याज अतिशय खट्टे पदार्थ : एवं खमीरवाले पदार्थ खाने से कुष्ठ तथा चमडी के दर्द होते हैं ।

नौ देवत्व की दाता देशी गाय :

१. माता के गर्भ से लेकर जीवनपर्यंत सर्वश्रेष्ठ पोषण।
२. तेजस्वी बुद्धि प्रतिभा ।
३. उत्तम रोग प्रतिकारक शक्ति, मानसिक रोगों तथा असाध्य रोगों से मुक्ति ।
४. भरपूर शारीरिक शक्ति ।
५. सर्वग्राही शौर्यपूर्ण तेजस्विता ।
६. दिव्य जातीय शक्ति ।
७. सुन्दर, सुडौल, कान्तिमय तेजस्वी स्वरूप ।
८. उत्तम वंश–नई पीढी ।
९. श्रेष्ठ यौवन और नीरोगी लंबी आयु ।

नव देवत्व के साथ कृषि का सनातन आधार देशी बैल, गोबर, गोमूत्र देनेवाली तथा अपार प्रेम, मैत्री एवं करुणा की वर्षा करनेवाली, सौन्दर्य की मूर्ति देशी गाय मानवजाति एवं राष्ट्र की पालनहार, जीवनदायिनी है । इसिलिये भारतीय संस्कृति में गाय को माता का स्थान दिया है । अपनी पीठ पर डिल्ले (कांध–खांद) वाली देशी गाय वास्तव में विश्वमाता है ।

गाय के घी का दिया : घर-ओफिस में सुबह-शाम देशी गाय के घी का दीया हानिकारक जंतुओ का नाश करके हवा को शुद्ध,निरोगी करता है । इसिलिये प्रत्येक घर एवं रहने के स्थान में सुबह-शाम गाय के घी का दीया जलाये ।

आयुर्वेद : देशी गाय के दूध को आर्यों ने शास्त्रो में मेध्य : बुद्धि में वृद्धि करनेवाला । चक्षुष्य : आँखो की रोशनी बढानेवाला । जीवनीय: प्राणशक्ति को टिकानेवाला । वृष्य : ओज, शुक्राणु, वीर्य वर्धक कहा है । गाय के दूध एवं घी रसायन, आयुष्य को स्थिर करनेवाला तथा हृदय के लिये हितकारी, शरीर एवं कोलेस्टेरोल के संतुलन की रक्षा करता है । गाय के दूध, घी से वजन एवं मेद में वृद्धि नहीं होती है । ये सफल प्रयोग प्रयोगशाला में किये गये है । विदेशी जर्सी काउ एवं भेंस के दूध, घी के गुण इन से विपरीत होते है । अत: वे खानेलायक नहीं हैं । देशी गाय के दूध, घी को सुवर्ण समान जानना चाहिये ।

डॉ. हितेश जानी, हेड ओफ डिपा. आयु. कोलेज–जामनगर

विज्ञान : भेंस के दूध, दही और घी केवल भारत में ही खाये जाते हैं । भेंस के दूध, दही, घी में स्थित चरबी शरीर में रक्त की नसों में जम जाती है । वह आरोग्य के लिये अत्यंत हानिकारक है । भारत में सगर्भावस्था और बचपन से ही भेंस का दूध खाया जाता है, जो संपूर्णतया अयोग्य है ।

गाय के दूध, घी, मक्खन, दही और छाछ पोषण एवं आरोग्य की द्रष्टि से श्रेष्ठ है । गाय के दूध की प्रकृति मानव के दूध से अति समान होती है । अत: गाय का दूध मानवशरीर की पोषण की आवश्यकताओं को श्रेष्ठतया संतुष्ट करता है । गाय के दूध का

केरोटिन, सी.एल.ए. और ओमेगा–३ से श्रेष्ठ रोगप्रतिकारकशक्ति उपलब्ध होती है और लहू की नसों को स्वच्छ रखता है । गाय का दूध मानव के लिये श्रेष्ठ 'आहार' है ।

डॉ. कमल परिख
एम. डी. राजकोट

डॉ. कांत जोगाणी
एम. डी. राजकोट

डॉ. राहुल कोयाणी
एम. डी. राजकोट

होमीयापेथी : गाय के दूध, मक्खन, घी निम्न लिखित रोगों में अच्छे परिणाम दे सकते है । आँखो की रोशनी बढाने के लिये डायाबिटीस, सरदर्द, आधासीसी (माईग्रेन) चक्कर, एसीडिटी, सांध–दर्द (घूटन), छाती में दर्द, जीभ के छाले, कब्ज, बार बार शर्दी, बुखार, सगर्भा का वमन, एनिमिया, किडनी के रोग, दम, (श्वास), वजन में वृद्धि, रांझण (पाँव का एक रोगं), मासिक धर्म के प्रश्न, आत्मश्रद्धा की कमी, यादशक्ति की कमी, छोटे बालकों का हैजा और अपाचन जेसे अनेक रोगों को मिटाते है और अच्छी नींद लाते है । वे सगर्भा स्त्रियों, बालकों एवं सबके लिये श्रेष्ठ पोषक आहार है ।

डॉ. जी. एम. शर्मा (एम. डी. होमीयोपेथी)
प्रिन्सिपल–ए. जे. सावला मेडिकल कोलेज, महेसाणा

गोमूत्र अर्क का चमत्कार : हमारी संस्था में हम देशी गायों को रखकर केन्सर, डायाबिटीस, अधिकतर मेद, सायटिका, फेफडों का दर्द, दम, सोरायसिस, त्वचा के रोग, तमाम प्रकार के वात रोग, हृदयरोग, थाइरोइड जैसे असाध्य रोगों के लिये जिस किसी भी रोग को मिटानेवाली वनस्पतियों के साथ मिश्रित कर ४० प्रकार का गोमूत्र अर्क निर्माण करते है । इस अर्क द्वारा हमने ५००० से भी अधिक असाध्य रोगों के मरिजों में उत्तम फायदे से लेकर संपूर्ण रोगमुक्ति प्राप्त कर सके है । ३० किलो तक वजन कम होने के संकडो परिणाम पाये हैं ।

विज्ञान शिक्षक : **मनजीभाई बालधिया**, लोकशाला
मु. खडसली, ता. सावरकुंडला, मो.: 099796 66723

गाय से संतान-प्राप्ति : हमारी शादी के चार साल तक बालक न होनेसे हमने तमाम एलोपेथिक टेस्ट एवं दवाइयों का उपयोग कर लिया । तथापि कोई ठोस परिणाम आया नहीं । पांच साल बाद एक आयुर्वेदिक डॉक्टर की सलाह से हम पति–पत्नीने दैनिक एक–एक लिटर देशी गायका दूध पीना शुरू किया और चमत्कार हुआ । किसी भी प्रकार की दवाई के बिना ८ महीने बाद मेरी पत्नी गर्भवती बन गई । सातवें महीने पर रिपोर्ट आया की जनन अवयव में क्षति है । अतः सिज़ेरियन शस्त्रक्रिया के बिना बालक का जन्म नहीं हो सकेगा । अतः अंतिम दिन पर डॉक्टरों ने उसकी अस्पताल

में भर्ती कर दी । डॉक्टरने शस्त्रक्रिया की तैयारी की । उस समय दूसरी चमत्कारिक घटना घटी । कुदरती रीति से ही प्रसूति हो गई और ४ किलो ग्राम वजनवाली बालिका का जन्म हुआ । मेरे यहाँ संतान प्राप्ति एवं डॉक्टर के रिपोर्ट के बावजूद भी सिज़ेरियन बिना कुदरती प्रसूति दोनों चमत्कार केवल एवं केवल देशी गाय के दूध के आभारी हैं ।

मनोज पनारा–मोरबी, मो.: 098255 23490

हमने ५०० दंपती को देशी गाय के दूध–घी के साथ कुछ आयुर्वेदिक दवा से संतान प्राप्ति की सफलता मीली है ।

वैद्य एम. डी. जाडेजा–मोरबी मो.: 048257 23800

देशी गाय के ६० प्रकार के औषधिय घी से रोगमुक्ति:

हमने देशी गाय के औषधिय घी से १००० से ज्यादा नि:संतान दंपति को संतान प्राप्ति में शफलता मीली है । देशी गाय के ६० प्रकार के औषधिय घी से हजारो दर्दिओ को शारीरिक, मानसिक रोगो से मुक्ति दीलायी हैं । **देशी गाय के घी में मानव शरीर से ०.६ टका कोलेस्टेरोल कम होता है । इसिलीये देशी गाय के दूध घी से कोलेस्टेरोल कभी बढता नहीं है ।**

डो. पांचाभाई दमणिया–एम. डी. आयुर्वेद
उना जि. जूनागढ फोन : 02875-222610
समय : शाम ७:०० से ९:००

गायकी छाश अमृत : पहले हम भेंस का पालन करते थे । भेंस की छाछ पीने से मुझे दूसरे दिन ही सर्दी–खाँसी हो जाती थी । दवाई लेनेके पश्चात् भी वह मिटती नहीं, साथ साथ सालभर में दो–तीन बार गलेमे छाले पड़ जाते थे । उसकी चिकित्सा बड़ी अस्पताल द्वारा करनी पड़ती थी । मेरी परेशानी का कोई अंत नहीं था । उस दौरान में मनसुखभाई सुवागीया की गीर गाय अभ्यास–यात्रामें संमिलित हुआ । और उसके प्रभाव स्वरूप हमने भेंस को निकाल दिया ओर देशी गायो को लाये । अभी में देशी गाय की छाछ तीन सालसे पीता हूँ । अभी सर्दी, कफ, खाँसी कभी भी होते नहीं । मेरा अनुभव है कि गाय की छाछ अमृत है, जबकि भेंस कि छाछ सर्दी, कफ एवं खाँसी करनेवाली होती है ।

कानजी गोविन्द परमार
गाँव–सिद्धपुर, ता–खंभालिया, जि–जामनगर

विशेष: सर्दी, कफ, खाँसी एवं एसिडिटी वाले लोगों को जान लेना चाहिये कि शामको छाछ–दही हानिकारक हैं । आयुर्वेद के मंतव्यअनुसार शामको गाय का दूध ही पीना चाहिये ।

गाय के घी से हृदयरोग से मुक्ति : मुझे ढाई साल से हृदय के स्नायुओंकी पीड़ा सतत रहा करती थी । दाहिने पार्श्व के आधार पर सो भी नहीं सकता था । अतः अमदावादकी **BAPS** अस्पताल में इको टेस्ट द्वारा जाँच करने से पता चला कि, हृदय की मुख्य तीन नालियाँ ७०% बंध थीं तथा कोलेस्टेरोल की मात्रा भी अधिक थी । उसके बाद मनसुखभाई सुवागीया की सलाह से मैंने हमेशा सुबह में देशी गाय के दूध की एक कप चाय में एक चमच देशी गायका घी डालकर पीना शुरू कर दिया । नौ महीने में बिना किसी दवाई हृदय का दर्द बंद हो गया । उसके उपरांत उसी अस्पताल में जाँच करवाई तो डॉ.वी.पी.पटेलने बताया कि अभी हृदय की तीन नालियाँ खुल गई हैं। और सामान्य बन गई है और कोलेस्टेरोल का प्रमाण भी सामान्य है । मूल हृदयरोग से मुक्ति मिल गयी है। इस बात का प्रमाण तब मिला जब १-११-०८ के दिन जलक्रांति ट्रस्ट द्वारा आयोजित जल एवं गोरक्षा के लिये गिरनार परिक्रमा में किसी भी तकलीफ बिना १० घंटे में तीन ऊँचे पर्वतो को पार कर मैंने २७ किलो मीटर की परिक्रमा संपन्न की । देशी गाय के घी से ब्लडप्रेसर (बी.पी.) वाले अन्य तीन युवकों ने भी हमारे साथ आसानी से इस परिक्रमा को साकार किया ।

अतुलभाई डी. पटेल - BAPS साळंगपुर,
मो.: 094290 65134

इस प्रयोग से असंख्य लोगो को कोलेस्टेरोल, बी.पी. (रक्तचाप) अधिक वजन, वायु, कब्जियात से मुक्ति मिली है । देश के डॉकटरों के लिये देशी गाय के दूध, घी के गुण एवं परिणामों का अभ्यास करने की कडी आवश्यकता है ।

गाय के घी से अंधत्व गया : मेरी आँख में रक्त आ जानेकी तकलीफ हो गयी । मैंने आँखों के नामांकित डॉकटरो की दवाई लगातार तीन साल तक ली । चिकित्सा एवं दवाइयाँ लेने पर भी वह तकलीफ बढती ही गयी । और मुझे दोनों आँखोंमें अंधापन संपूर्णतया आ गया । एक वैद्य की सलाह से नाक में हमेशा तीन-तीन बूंद देशी गाय का घी डालना शुरू कर दिया । दो महीनों में आँख कि रोशनी वापस आ गयी । आज में अखबार पढ़ सकता हूँ। गाय के घीने मुझे नवजीवन प्रदान कर चमत्कार किया है ।

जीवन ठुंमर-राजकोट, मो.: 099251 84654

नाक में हमेशा रात को गाय के घी के तीन बूंद डालने से आँखों का तेज बढता है। अच्छी नींद आ जाती है, रातको नाक में से आने वाली घृणास्पद आवाज बंद हो जाती है। सर के बाल काले एवं गाढ़े बन जाते है।

गाय के घी से सात रोगों से मुक्ति : में ७ रोगों का भोग बना हुआ था (१) साइनस (२) अस्थमा (३) हाई ब्लड प्रेसर (४) अनिद्रा (५) डायाबिटीस (मधुमेह) (६) कभी कभी हृदय की

धडकन थोड़ी देर के लिए अनियमित हो जाना (७) उंदरी (बालों का झड जाना) इन सातों रोगों की हमेशा २१ टिकियाँ खानी पडती थीं । कायम दवाई लेने पर भी एक भी रोग मिटता नहीं था । बीमारी, दवाइयाँ और खर्चसे मै परेशान हो गया था और थकान महेसूस होती थी। मैं एलोपेथिक दवाई से तंग आ गया था । अत: एक वैद्यकी सलाह से नये प्रयोग के रूप में हमेशा सुबह में चाई में देशी गाय का घी दो चम्मच डालकर पीना शुरू कर दिया । मानो चमत्कार हो गया । केवल दो महीनों में इस प्रयोग से मेरे सातों रोग मिट गये । गत चार साल से तमाम दवाइयाँ लेना बंद कर दिया है । जारी रखा है देशी गाय का घी जो जिंदगीभर लेने का मेरा द्रढ संकल्प है ।

गाय के घी से मेरी कब्ज की समस्या का भी हल हो गया और मेरा वजन १०२ किलो था, वह ७६ किलो पर आ गया है । एलोपेथिक विज्ञान ने सारे संसार में एक भ्रान्ति फैलायी है कि हृदय रोग (बी.पी.) और ज्यादा वजनवाले लोगों के लिये यह अनिवार्य है कि वे घी का स्पर्श तक न करें । भेंस के एवं जर्सी काउ के दूध, घी के लिये यह बात सही होगी, लेकिन हमारी देशी गाय के घी से तो मुझे हृदयरोग एवं ज्यादा वजन इन दोनों से मुक्ति मिल गई है । नये प्रयोग के रूप में एक महीने से में हमेशा रात को उंगली की नोक से १० मिनट तक गाय का घी सर पर मालिश करता हूँ । इस से सर पर अल्प संख्या में और पतले पतले बाल थे वे अभी मजबूत,और काले हो गये हैं । इस के अलावा स्वप्नरहित गहरी

नींद भी आ जाती है । देशी गाय के घी से मेरे शरीरका काया–कल्प हो गया है । यह एक ठोस हकीकत है ।

राजुभाई जानी - अधीक्षक सूचना विभाग, राजकोट
मो.: 098257 65599 समय 10-00 से शाम 8-00

बालक बच गया : मेरी अस्पताल में साडेतीन मास की उम्रवाला एक बालक उपचार के लिये लाया गया था। माताका अपना दूध न होने से ही ऊपर का दूध उसे पिलाया जाता था। उलटी (वमन) और दस्त की तकलीफ थी । अत: मैंने बालक को भेंस का दूध देना बंद करने का कहा और पावडर का दूध देने का शुरू करवाया एवं दवाइयाँ दीं । इससे एक सप्ताह में ही हैजा की शिकायत बंद हो गई किन्तु बालक का वजन बढता ही नहीं था । तदुपरांत विटामिन, केल्शियम, शक्ति की दवाइयाँ देना प्रारंभ करवाया । तथापि एक महीने बाद भी वजन में बढ़ती न हुई । अत: बालक के बारे में उच्च अभिप्राय के लिये राजकोट के नामांकित बाल रोग निष्णात डॉ.सिल्हर के यहाँ भेजा गया। उन्होंने दवाईयों में कोई परिवर्तन न करवाया किन्तु पावडर का दूध पिलाने की मना कि और देशी गायका शुद्ध दूध पिलानेकी सिफारिश की । इस परिवर्तन से एक ही महीने के बाद एक किलो वजन वृद्धि दर्ज हुई और बालक संपूर्णतया स्वस्थ बन गया। मेरे लिये एक आश्चर्यजनक घटना घटी । मेरे अभिप्राय में यह देशी गाय के दूध का ही चमत्कार है ।

डॉ. डी. जी. माकडिया–एम.डी.(पेड) तरुण अस्पताल,
जूनागढ़. फोन: 0258-2630152

गायके दूध का माता के दूध से भी बेहतर परिणाम : मेरी पत्नीने जुड़वे पुत्रों को जन्म दिया । अत: जन्म से लेकर ही एक बच्चे को माता का दूध एवं दूसरे को देशी गाय का दूध दे कर संवर्धन किया । जिस बालक को गाय के दूध से संवर्धित किया था उसका स्वास्थ्य पहले बालक की अपेक्षा तीन से चार गुना बेहतर रहा । माता का दूध पीने वाले बालक को बालरोग जैसे कि ज्वर, सर्दी, हैजे की बीमारी चार बार आती थी, तब देशी गाय का दूध पीनेवाले को एक बार ही होती थी और वह भी सामान्य । आज दोनों बालक तीन वर्ष के हो गये है । तभी भी गाय के दूध से संवर्धित बालक अधिक स्वस्थ, स्फूर्तिवाला एवं बलवान है । देशी गाय के दूध का परिणाम माता के दूध से भी उत्तम आया है ।

विजय रूपारेलिया- गाँव: बिलियाळा, ता–गोंडल, जि. राजकोट मो.: 099094 85726

गाय के दूध से कफ एवं सर्दी से मुक्ति : मेरे परिवार में और मित्रों में बहुतों को कायम सर्दी की एवं कफ की तकलीफ रहा करती थी । उनका इलाज डोक्टरो की दवाइयों से नहीं हो सका था । इन सब को सुबह में खाली पेट देशी गाय के ताजे एक ग्लास दूध में थोडा अदरक एवं चुटकीभर हलदी घुल कर पीने से सर्दी एवं कफ निर्मूल हो गये हैं। दूध पीने के बाद दो घंटे तक कुछ खाना या पानी पीना नहीं । गायका पीयुष (खीरूज) पीनेसे और उनकी

पीयुषी खाने से आँखों के दो नंबर छह महीनों में दूर हो गए है ।

गोपाल जी. सूतरिया – गीर गाय संवर्धक–अमदावाद मो–098790 02222

गाय के दूध में थोडा सा अदरक एवं हलदी डालकर सुबह–रात को पीने से दूध अच्छा पाचन होता है । वायु, कफ, सर्दी, रक्तविकार मिट जाते है और रक्त शुद्ध होकर चमड़ी का सौंदर्य बढ़ता है । दूध पीने के बाद १ से २ घंटे तक पानी नहीं पीना चाहिये ।

गाय के दूध से एसिडिटी से मुक्ति : मुझे गत पाँच साल से एसिडिटी एवं पेट में दाह की बड़ी तकलीफ थी । मनसुखभाई की सलाह से मैंने सुबह में उठकर एक ग्लास गाय के गरम दूध में एक चम्मच गाय का घी डालकर हलका सा गरम पीना शुरू किया । ऐसा करने पर एक ही महीने में मेरी तकलीफ दूर हो गयी । अब नियमित यह दूध पीता हूँ और संपूर्ण स्वस्थ हूँ ।

दिग्पाल रामकुभाई खाचर–राजकोट. मो.: 098795 07744

देशी गाय ही सच्ची गाय : हम पहले जर्सी एच.एफ. काउ रखते थे। उसके दूध से परिवार के बालको में टी.बी एवं कई बीमारी हो जाती थी। मनसुखभाई के गीर गाय हमारे आँगनमे अभियान से प्रेरणा लेकर हमने जर्सी काउ को निकाल दिया और देशी गायों को रखा है । उसके दूध, घी, छाछ पूरे परिवार के लिये बहुत ही आरोग्यप्रद साबित हुए हैं । अभी हमने विदेशी जर्सी और

देशी गाय के बीच का तफावत या भेद समज लिया है। हमारे मत में देशी गाय ही सच्ची गाय है।

गोभक्त **भरत परसाणा**–राजकोट मो–097263 99699

हितेश सोरठिया–भोजपरा, गोंडल मो–099799 24344

गोमूत्र से जीवनरक्षा : स्वस्थ शरीर में श्वेत कणों की संख्या पांच से आठ हजार की होती है । मुझे कोई भी कारण पर वह संख्या बढ़ कर २४ हजार हो गई थी । निष्णात डोक्टरों की बहुत महँगी एंटीबायोटिक दवाइयों के पूरे कोर्स कर लेने पर भी कोई फर्क नहीं दिखाई देता था । तभी डोक्टरोंने कहा कि यदि यह परिस्थिति लंबे समय तक रहेगी तो केन्सर हो जानेका संभव रहता है । हररोज सुबह में खाली पेट १०० ग्राम देशी गाय का गोमूत्र पीना शुरू कर दिया । मुझे एक ही महीने में रोग मिट गया ।

डॉ. के. पी. कारेथा–मोटादडवा, मो.: 097233 10885

गोमूत्र अर्क से ३५ साल पुराना बी.पी. मिट गया :

मुझे प्रथम प्रसूति के समय ही बी.पी. हो गया था । उसकी दवाई मैं ३५ वर्ष से लिया करती थी । तथापि तकलीफ दूर नहीं होती थी । मनसुखभाई सुवागीया के साथ मेरी मुलाकात होने पर हररोज सुबह में २० ग्राम गोमूत्र अर्क पानी के साथ लेने से ४ महीनों में ही ३५ साल पुराना बी.पी. संपूर्णतया मिट गया । स्फूर्ति–शक्ति में भी वृद्धि हुई । इस चमत्कार से डॉक्टर भी आश्चर्यमुग्ध हो गये ।

जयश्री दिलीपभाई संघवी–हैदराबाद मो.: 093910 46834

गाय के दूध से चिरंजीव यौवन एवं शतायु

हमारे क्षत्रिय परिवार में परंपरा से ज्यादा मात्रा में गाय के दूध, घी, दही, घी का आहार लिया जाता है । मेरे पिताजीने किसी भी प्रकार कि बीमारी के बिना ही संपूर्ण स्वस्थता से ९८ वर्ष का जीवन व्यतीत किया । मैं बचपन से दैनिक लगभग दो लिटर देशी गाय के दूध, दही का आहार लेता हूँ । आज ७१ सालकी उम्र होने पर भी यौवन टिक रहा है । प्रतिदिन बड़ी सुबह में ४ से शाम तक गोशाला में गोदोहन, गायों की देखभाल, ड्राइविंग तमाम किसम के काम करता हूँ । कभी भी थकान नहीं लगती । शरीर, आँख, स्मरणशक्ति संपूर्ण तथा सलामत हैं। ऐसी नीरोगिता, यौवन और शतायु देशी गाय के दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी के भरपूर आहार के आभारी हैं।

प्रदीपसिंह बी. राओल, सागवाडी गोशाला, भावनगर.

गायका दूध एवं बालक : गायके दूध में सेरिबलम नामक तत्त्व रहता है और मस्तिष्क सेरिबलम का ही बना हुआ है । मस्तिष्क का विकास ८७% गर्भावस्था में और बाकी का १२ वर्षकी उम्र पर्यंत हो जाता है । इस लिये सगर्भा स्त्री तथा बालकों के लिये देशी गाय के दूध–घी, मक्खन पृथ्वी पर का श्रेष्ठ पोषक आहार है । चांदी के बर्तन में शाम को दही जमा कर सुबह में और दोपहर के समय सगर्भा स्त्रीको खिलाने से बालक बुद्धिमान तथा दिखनेमें गोरा–

सुन्दर होता है । गाय का दूध, घी बालक को आँखों का तेज एवं शरीर, मन, बुद्धि की तेजस्विता, आरोग्य, शक्ति, प्राणशक्ति प्रदान करके मेधावी बनाता है ।

※ आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ आर्यभिषक के मत से पंचगव्य के गुण

गोमूत्र : आयुर्वेद के असंख्य परीक्षणों से सिद्ध हो चूका है की देशी गाय का गोमूत्र रेचक एवं सारक : अजीर्ण, वायु, पुराने मल को शरीर में से बाहर निकालनेवाला है । शोधक एवं भेदक : समग्र शरीर में से कफ, वायु जमे हुए क्षार, कोलेस्टेरोल, जहरीले तत्त्व, मृत कोष, केन्सर या अन्य रोगों की ग्रंथियों को पिघलाकर बाहर निकालने वाला है । दीपक: पाचन में वृद्धि करनेवाला है । पोषक–गोमूत्र में अनेक सुपाच्य तत्त्व होते है । अतः गोमूत्र से केन्सर, डायाबिटीस, बी.पी., हृदयरोग, कच्चा आम, संधिवा, पेट के छाले, सूजन, दाँत एवं मुख के रोग, नेत्र के रोग ज्वर, मानसिक रोग, किसी भी अंग की जलन या पीड़ा, बवासीर, मसा, शरीर के छाले, कुष्ठ जैसे १५० से भी बढ़कर रोगों को मिटाने वाला, बुद्धिशक्ति, शरीरशक्ति बढ़ानेवाला और पोषक संजीवनी रूप औषध है । स्वस्थ एवं युवान गाय के गोमूत्र का ही उपयोग औषध के रूपमे होता है । आयुर्वेद के मंतव्य अनुसार माँ का दूध पीनेवाली बछड़ी का गोमूत्र श्रेष्ठ गुणकारी है । वृध्द एवं बीमार गाय का गोमूत्र औषध के रूप में लेना नहीं । अपनी मालिकी की

या अपनी ही नजर के सामने की स्वस्थ गाय का गोमूत्र औषध के रूप में सीधा पीया जा सकता है । उसके सिवा गोमूत्र को दो उफान आये तब तक गरम करके ठंडा होने पर सूत के कपडे से छानकर उपयोग में लेना । सुबह–शाम खाली पेट होने पर ७५ से १०० ग्राम गोमूत्र पीया जा सकता है । गोमूत्र को उबाल कर उसकी बाष्प (भाप) को ठंडा कर के उसका अर्क बनाया जाता है । शहरों में जहाँ ताजा गोमूत्र उपलब्ध न हो सके वहाँ इस गोमूत्र के अर्क का दर्दी की प्रकृति की अनुकूलता अनुसार हररोज सुबह में २५ से ५० ग्राम दिन में एक से दो बार लिया जा सकता है । गोमूत्र का अर्क एक वर्ष तक अच्छा रहता है । अल्सर, बवासीर के मरीजों को चाहिए की वे वैद्य की सलाह अनुसार ही पीएँ । बाकी लगभग अनेक रोगों में गोमूत्र संजीवनी तुल्य रोगनिवारक सिद्ध हुआ है । नीरोगी व्यक्ति को भी रोगों को आते ही रोकने के लिए एवं दीर्घायु बनने के लिए वर्ष में एक महीना शीत ऋतु तथा वर्षा ऋतु में हंमेशा सुबह में पेट खाली होने पर पानी के साथ ५० से १०० ग्राम गोमूत्र या २५ ग्राम अर्क पानी के साथ पीनेसे शरीर शुद्ध होता है । वात, पित्त और कफ तीनों रोग मिट जाते है । शरीर में नहीं दिखाई देते अत: उगती रोग–ग्रंथियाँ निर्मूल हो जाती हैं। हजारों दर्दियो में गोमूत्र एवं अर्क की सफलता की हमने परीक्षा की है और स्वयं भी इसका लाभ उठाया है ।

देशी गाय का घी (धृत-तुप) : शीत, सुगंधयुक्त, स्वाद, रुचि, धातु, आँखो की रोशनी, सौन्दर्य बढानेवाला, शुक्राणु, वीर्य, ओज, बुद्धि, तेजस्विता और बल दायक है। बालक, वृद्ध एवं कमजोरों के लिये हितकारी है । पित्त, वात, कफ, दाह, गर्मी, प्यास, मानसिक भ्रम को दूर करनेवाला, हृदय तथा स्वर के लिये हितकारी, श्रेष्ठ रसायन एवं आयु का स्थापक है । ताजा घी खाने में श्रेष्ठ है । एक साल पुराना घी औषध के रूप में उपयोगी बनता है । **अथर्ववेद में देशी गाय के घी को सृष्टि का साररूप कहा है ।**

गाय का दही : गाय के दही में पाचन को बढानेवाले और पेट–अँतडी के जंतुओ को नष्टकरनेवाले बीटाकेसिन नामक बेक्टेरिया रहते है । अत: प्रतिदिन प्रात: दही नीरोगी रखनेवाला एवं अमृत की भाँति पोषक है। गाय का दही बल, रुचि, तेजस्विता बढानेवाला, पाचक, पोषक शीत तथा वायुनाशक है । दही में तीन–चार काली मीर्च का चूर्ण डालकर खाने से पाचन तेज होता है और दही अधिक स्वादिष्ठ लगता है ।

मक्खन : प्रतिदिन सुबह में १५ से २५ ग्राम देशी गाय के हलका गरम मक्खन में ५ ग्राम गुड और एक से दो ग्राम सोंठ डालकर पीने से पुरानी कब्ज, वायु मिटते हैं । शरीर में धातु, शुक्राणु, बल की वृद्धि होती है। कठिन पेट अत्यंत नरम हो जाता है । मक्खन से बच्चे की ऊंचाई, आँखो की रोशनी, शक्ति एवं बुद्धि में वृद्धि होती है। **बालक, युवक, पौढ के लिये ये अमृत रसायन प्रयोग है ।**

छाछ : सुबह में खाली पेट छाछ पीने से कमजोर हुए जठर–अँतडी, पुन: सशक्त बनते है । वात–पित्त, कफ तीनों दोष एवं बवासीर मिट जाते है । गाय की छाछ मेद को कम करनेवाली और प्यास को छिपानेवाली, शरीर तथा हृदय को बलयुक्त करनेवाली, पीलिया, डायाबिटीस, मेद, बवासीर, पांडुरोग, संग्रहणी, कब्ज, हैजे, अरुचि, अफारा, भगंदर, पेट का सोथ (सूजन), पेट–अंतडी के छाले, कुष्ठ, कृमि, पसीनेकी दुर्गंध, पाचन का अभाव, और ज्वर का नाश होता है । छाछ में जरा सोंठ डालकर पीने से उपर्युक्त रोगो में विशेष लाभ होते हैं। छाछ में धनिया, जीरा, नमक डालकर पीने से एसिडिटी, पित्त का व्याधि होता नहीं है । **सुबह में देशी गाय की छाछ-सोंठ पेट के सभी रोग मीटानेवाली अमृत संजीवनी है ।**

देशी गाय की विशेषता

(१) गाय कमीग्रस्त सूखे में अत्यंत अल्प या सूखा खोराक खाकर भी दूध देती है । गोचर में हमेशा १० से २० कि.मी. चलकर अच्छा दूध दे सकती है ।

(२) देशी गाय आखिर तक दोनों वक्त दूध देती है ।

(३) देशी गाय प्रेमयुक्त स्वभाव से बछडे को देखने पर ही या पालक के हाथ का स्पर्श होते ही दूध देने तैयार हो जाती है । अत: देशी गाय को दुहने के लिये इंजेक्शन देने की जरूरत नहीं रहती । १० मिनट में ही गोदोहन क्रिया पूर्ण होती है ।

(४) दो दिन के भूखे पेट पर भी तमाम देशी गायें प्रेम से दूध देती

है । कृषि के सनातन आधार बैल देती है ।

(५) देशी गाय सौन्दर्य एवं करुणा की मूर्ति है । पालक को अनन्य प्रेम, मैत्री और प्रसन्नता प्रदान करती है ।

(६) देशी गाय के दूध, घी, छाछ, दही खूब स्वादिष्ठ और सुगंधयुक्त होते है ।

गोपालक जब बीमार पडे तब उसकी रोगमुक्ति के लिये ऐसी वनस्पति देशी गाय जंगल, गोचर में स्वयं खाती है, जिसके गुण, दूध, गोमूत्र में आने से पालक की रोगमुक्ति होती है । शुद्ध नस्ल की देशी गाय सच्चे अर्थ में आरोग्यदाता है ।

भेंस

(१) आयुर्वेद एवं मानव के अभ्यास के आधार पर भेंस के दूध, घी, मक्खन, कफ मेद की वृद्धि करनेवाले, पाचन में दुष्कर, बालक, प्रसूता स्त्री, वृद्ध एवं बीमार के लिये अपथ्य हैं । कोलेस्टेरोल में वृद्धिकर हृदयरोग के उत्तेजक है। जडता एवं सुस्ती में वृद्धि करनेवाले हैं। भेंस, जर्सी, होलस्टिन प्राणियों को सर्वथा अल्प पसीना होता हैं। अत: हवा, पानी, खोराक द्वारा उनके शरीर में मिश्रित हानिकारक तत्त्व, सूक्ष्म विष उनके दूध में मौजूद रहते हैं।

(२) भेंस के दही, छाछ फिक्के कफकारक एवं पचने में भारी (मुश्किल) होते हैं।

(३) घासचारे की कमी, सूखे में भेंस दूध देना बंद कर देती है।

दूर तक स्थलांतर कर नहीं सकती।

(४) भेंस दो से तीन गायों का खोराक खा जाती है।

(५) बहुत सी भेंस प्रसूति के बाद दो, पाँच महीने में दिवस में एक ही बार दूध देनेवाली हो जाती है।

(६) भेंस जड बृद्धि का प्राणी होनेसे सरलता से उसे आंतरिक ऊर्मि नहीं आती। अत: दोहनक्रिया में एक घंटे से पाँच घंटे तक श्रम करना पडता है, ऐसी मुश्किलें हमने असंख्य घरों में देखी हैं। अत: पालक लोग भेंस को होर्मोन्स के इन्जेक्शन लगाकर दोहन क्रिया करते है। वह दूध आरोग्य के लिये भयंकर हानिकारक एवं विष समान है।

(७) भेंस के सुखे दिवस गाय से देढ या दुगुने होते हैं।

(८) भेंस का पेट आधा भरा हुआ हो तो भी भेंस मालिक को दूध के बदले लात मारती हैं। बिन उपयोगी भेंसा देती है।

(९) भेंस ग्रीष्म ऋतु में कम दूध देती है या दूध देना सर्वथा बंद कर देती है।

* देढ गुना घी देने के सिवा गाय की तुलना में भेंस का एकभी अधिक गुण नहीं है । जब कि गाय के १०० गुण हैं । कफ, हृदयरोग, मेदस्वी या पेट के रोगी को भेंस के दूध, घी अकाल वृद्धत्व एवं मृत्यु की और ले जाते है । आयुर्वेद के महान ऋषि चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावमिश्र, शास्त्री शंकर दाजीने गाय, बकरी, भेड, ऊँटनी, भेंस, हथिनी और घोडी सातों के दूध, घी, दही, छाछ, मूत्र, गोबर के असंख्य परीक्षणो के पश्चात् गाय के

दूध, घी, दही को अमृत और गोमूत्र को संजीवनी औषध कहा हैं । बकरी के दूध को दूसरे क्रमांक पर गुणकारी कहा है, जब कि भेंस के दूध को हानिकारक कहा हैं । देशी गाय का मूल्यांकन केवल दूध, घी के बाजारु मूल्य से करना यह महा अज्ञान है ।

विदेशी जर्सी जानवर

(१) पीठ पर डिल्ला(कांध–खांद) और सूर्यकेतु नाडी रहित, देशी गाय जैसी बुद्धि, करुणा एवं आत्मचेतना रहित, भेंस की तरह पसीना होने की प्रक्रिया शून्य, रंभाने का दैवी नाद के स्थान पर भयंकर चीख पाडनेवाला जर्सी / होलस्टिन प्राणी गाय ही नहीं, परन्तु अलग प्रकार के प्राणी हैं।

(२) इन प्राणियों के दूध, घी, छाछ गाय के पदार्थ नहीं है और उनके गोबर, मूत्र ये गाय के गोबर, गोमूत्र नहीं हैं।

(३) देशी गाय सौदंर्य की मूर्ति, मंगलकारी एवं आँगन की शोभा है । जबकि जर्सी जानवर आँगन में अमंगल है।

(४) भारत का गरम वातावरण अनुकूल न होने से कई रोगों के शिकार बननेवाले जर्सी प्राणी के दूध, दही, छाछ से टी.बी. सहित अनेक रोग होते हैं तथा स्वाद मे भी सर्वथा फिक्के होते है। विज्ञान के मतानुसार विदेशी काउ एवं भेंस के दूध, घी, छाछ, दही में बी. सी. एम. ७ (बीटा कैसोमोरफीन) नामक तत्त्व रहते है, जिससे मोटापा, हृदयरोग, संधि के रोग, डायाबिटीस, मानसिक रोग, श्वास, अशक्ति, जातीय निर्बलता, निस्तेज त्वचा, अकाल वृद्धत्व जैसे रोग उत्पन्न होते है।

(५) भारत की अमूल्य देशी गायों के साथ विदेशी जर्सी प्राणियों का वर्णसंकरण आर्थिक लाभ या विज्ञान नहीं है, किन्तु गोवंश के संपूर्ण नाश का महा पाप है।

हमारी देशी गाय ही सच्ची गाय है, हमारी गोमाता की हत्यारी जर्सी जानवर को कभी 'गाय' न कहें।

जर्सी के रोगीष्ट दूध, घी, छाछ को गोमांस की भांति त्याग दें । जर्सी के मूत्र को कभी गोमूत्र न समजें । जर्सी के रोगीष्ट मूत्र का उपयोग न करे ।

देशी गाय का दर्शन पूजन होता है । जर्सी जानवर आँगन में अशुभ है ।

भारत के सभी ४० गोवंश लुप्तता के कारण

(१) विदेशी जर्सी/एच. एफ. प्राणियों द्वारा गाय माता का वर्णसंकरण किया, यह देशी गोवंश के विनाश का प्रथम कारण है । कतलखाने में ज्यादातर बिन उपयोगी या बुढ्ढी गायो की कतल होती है । जब विज्ञान के नाम पर देश एवं विश्व में अच्छी से अच्छी गायों का ही वर्णसंकरण किया गया है । वर्णसंकरण से भारत और विश्व के सभी गोवंश लुप्तता की और जा रहा हैं एवं संपूर्ण नष्ट हो जायेंगे । देशी गायों का वर्णसंकरण गोवंश की कत्ल से भी करोडगुना गोवंशविनाश का कारण है । **देशी गायो का वर्णसंकरण पृथ्वी पर का सबसे बडा पाप है ।** भारत के अनमोल देशी गोवंश, गोसंस्कृति, कृषिसंस्कृति, परमात्मा की प्रकृति एवं राष्ट्र को बचाने के

लिए सारे देश में गाय का वर्णसंकरण तुरंत बंद करें ।

(२) गोशाला, पिंजरापोलों में रखे हुए और गाँव में भटकते हुए निकम्मे (शुद्ध नस्ल रहित) साँढ देशी गोवंश नाश का दूसरा कारण है ।

(३) समग्र देश के हरेक गाँव में उत्तम नस्लवाले नंदी से गोसंवर्धन होता था । उस नंदी पालन का बुनियादी धर्म भूल जाने से ।

(४) जल, समस्या के कारण घास, पानी की कमी से ।

(५) आजादी से आजतक दिशाविहीन गोसेवा से ।

(६) नई पीढी को पंचगव्य, गोपालन, गोदोहन, गोसंवर्धन का ज्ञान न देने से।

(७) डेरियों में देशी गाय के दूध, घी के गुणों को भूलकर, फेट आधारित दाम (मूल्य) से।

(८) जंगल, गोचर भूमि के नाश से।

(९) अकाल में व्यसन एवं सामाजिक, धार्मिक प्रसंगो में अमाप धन का दुर्व्यय करनेवाली तथा आँगन में से, गाय, बैंलो को छोड देनेवाली अज्ञानि, कायर एवं स्वाभिमान शून्य प्रजा के कारण देश के तमाम गोवंश लुप्तता की और गये है।

वर्णसंकरण से गोवंश का संपूर्ण नाश होता है । भटकते निकम्मे साँढ से अच्छी गायों का वंश बिगडता है, मवादी रोगों का फैलावा होता है और निम्न स्तर के गोवंश की संख्या बेहद बढती

है। गोशाला, गाँवो, शहरो में निकम्मे साँढ को बैल बनादे । अत: देशी गायों का वर्णसंकरण और निकम्मे साँढ की समस्या निर्मूलन से ही देशी गोवंश का अस्तित्त्व रहेगा एवं गुणवत्ता बढेगी ।

गोवंश एवं प्रकृति के ज्ञान बिना सारे देश में गोशालाओं में देशी गोवंश का मिश्रण हुआ है । निकम्मे साँढों से गायों को फालु (संवर्धन) किया जाता है । अैसा गलत कार्य गोसेवा नहीं है, बल्की गोनाश का महा पाप है । कुदरतने हरेक प्रदेश के जलवायु के अनुरूप गोवंश निर्माण किया है । एक स्थान में दो गोवंश साथ रहेंगे तो मिश्र गोवंश होगा ही होगा । कुदरत से बडा कोई व्यक्ति, विज्ञान, तंत्र नहीं है । ईसलिये कुदरती कानून का स्वीकार करके अपने प्रदेश के गोवंश का ही गोशाला, गाँव एवं प्रदेश में पालन करें । तब ही हमारे अनमोल देशी गोवंश की शुद्धता बनी रहेगी एवं गुणवत्ता बढेगी । ज्ञान एवं सत्कर्म से ही मंगल होता है । सिर्फ भावनाओं एवं नारे बाजी से आजतक न कुछ हुआ है न होगा । ईच्छाशक्ति, संकल्प, ज्ञान एवं सही दिशा के कर्म से ही हमने गीर गाय क्रांति की है । १४ कामधेनुं सूत्र के राह पर चलकर ही हमे भारत के सभी गोवंश की रक्षा करके उसे आबाद करना है । आबाद गोवंश से मानवजाति एवं राष्ट्र अवश्य आबाद होगा ।

देशी गायों को उत्तम देशी साँढ से ही फालु (संवर्धन) करे । जर्सी का बीजदान कभी न करे ।

विदेशी जर्सी/एच. एफ. प्राणियों को देशनिकाल करें,
भारत के अमूल्य देशी गोवंश की रक्षा करें ।

गोवंश की शुद्धता के लिये गोशालाओ, गाँवो, शहरो को निकम्मे साँढ से मुक्त करे ।

भारत के देशी गोवंशरक्षा के सनातन सूत्र

१४-कामधेनु सूत्र (गोवेद ग्रंथ से)

१ आँगन में उत्तम देशी गायों का पालन करें।

२ उत्तम देशी साँढ (नंदि) से गोसंवर्धन करे ।

३ माता के गर्भ से जीवनभर देशी गाय का ही दूध, घी, छाछ का आहार लें ।

४ देशी गाय के गोबर, गोमूत्र, बैल से गाय आधारित कृषि करें।

५ गाँव को जलसमस्या से मुक्त करें । गाँव के नदी, नाले पर चेकडेम–तालाब बनाये । हर खेत में खेत तालाब बनायें ।

६ अकाल में तन, मन, धन से गोवंश की रक्षा करें ।

७ गाय के दूध–घी की शुद्धता को गोभक्ति समजें ।

८ देशी गाय का विदेशी साँढों से वर्णसंकरण न करें । एवं दो देशी गोवंशो को भी मिश्र होने से बचायें । शुद्ध देशी गोवंश का निर्माण एवं जतन ही सनातन गोरक्षा है ।

९ निकम्मे साँढो से गाँवों–शहरों को मुक्त करें ।

१० गोचर भूमि एवं जंगल की रक्षा करें ।

११ हरेक गाँव में गोरक्षा संस्थान की स्थापना करें ।

१२ नई पीढी को गोपालन, गोदोहन, गोसंवर्धन संस्कार दें ।

१३ गाय आधारित चिकित्सा एवं उद्योगों का विस्तार करें ।

१४ भारतीय गोसंस्कृति का जतन करें ।

हमने सारे भारत के गाँवों में घूमकर देशी गोवंश का सर्वत्र विनाश अपनी आँखों से देखा है । इसलिये त्वरित जागें और अपने प्रदेश एवं हमारे राष्ट्र के अनमोल गोवंश को लुप्तता से बचायें। परमात्माने भारतभूमि को ४० से ज्यादा गोवंश का वैविध्य दिया है। देशी गोवंश भारतभूमि की शान, सौंदर्य, आरोग्य, ऊर्जा और शक्ति का सनातन स्त्रोत है । उनकी सुरक्षा एवं आबादी ही सही गोसेवा, गोरक्षा है, साथ में गोसंस्कृति, कृषिसंस्कृति, ईश्वर की बनाई प्रकृति एवं राष्ट्र की भी सुरक्षा है ।

भारत के एवं विविध राज्यों के सरकारी तंत्र ने देशी गोवंश की सही दूध उत्पादन क्षमता एवं बैलों की कार्यक्षमता का कोइ सही अध्ययन किया नहीं है । देशी गोवंशो की उपेक्षा से श्रेष्ठतम

वंश निर्माण एवं दूध उत्पादकता बढाने के बजाय देशी गोवंश का अप्राकृतिक वर्णसंकरण करके गोवंश के संपूर्ण विनाश का अक्षम्य अपराध किया है । सारे भारतवासी जागे ईस भूल को सुधारकर अपने प्रदेश एवं राष्ट्र के देशी गोवंशो की सुरक्षा–आबादी का संकल्प करे ।

गोवंशज्ञान, प्रचंड इच्छाशक्ति, गोवंश सुधार का महा संकल्प एवं गोवंश रक्षा की कर्मभक्ति से हमें अनमोल देशी गोवंश बचाना है । १४ कामधेनु सूत्र से लुप्तता की ओर जा रहे भारत के तमाम देशी गोवंश को हम फिर से आबाद कर पायेंगे । देशी गोवंश, गोसंस्कृति, कृषिसंस्कृति, प्रकृति एवं राष्ट्र रक्षा के लिये भारत के प्रत्येक नागरिक का यह प्रथम कर्तव्य है ।

अपने प्रदेश के देशी गोवंश की रक्षा एवं संवर्धन से बडी कोइ गोसेवा, धर्म, पूजा, भक्ति नहीं है ।

भारत के विश्वस्तरीय अनमोल गोवंश

भारत के गाँव गाँव घूमकर हमने देशी गोवंश, उनकी दूध उत्पादकता एवं बैलों की कार्यक्षमता का गहराई से अध्ययन किया है । देश के सरकारी तंत्रने देशी गोवंश का गलत दूध उत्पादन बताया है । देशी गोवंशों के श्रेष्ठतम संवर्धन से हम अधिक दूध उत्पादन एवं विश्व के प्रथम क्रमांकित बैल प्राप्त कर सकते है ।

क्रम	देशी गाय	दैनिक दूध
(१)	शाहिवाल–पंजाब	१५ से २५ लिटर
(२)	गीर–सौराष्ट्र (गुजरात)	१५ से २५ लिटर
(३)	कांकरेज–कच्छ, उत्तर गुजरात	१५ से २५ लिटर
(४)	राठी–उतर राजस्थान	१५ से २५ लिटर
(५)	थरपारकर– पश्चिम राजस्थान	१५ से २५ लिटर
(६)	नागोरी–जोधपुर, पाली, राजस्थान	८ से १२ लिटर
(७)	हरियाणा–हरियाणा राज्य	१० से २० लिटर
(८)	गंगा तीरी–मथुरा, यु.पी.	१२ से २० लिटर
(९)	मालवी–मालवा, मध्यप्रदेश	१० से १८ लिटर
(१०)	निमाडी–खंडवा, मध्यप्रदेश	१० से १५ लिटर
(११)	खिल्लारी–दक्षिण महाराष्ट्र	७ से १० लिटर
(१२)	देओनी–लातूर, महाराष्ट्र	८ से १० लिटर
(१३)	गाँवलव, विदर्भ–महाराष्ट्र	८ से १२ लिटर
(१४)	आँगोल–दक्षिण आंध्रप्रदेश	८ से १८ लिटर
(१५)	अम्रितमहल–हसन, कर्णाटक	७ से ८ लिटर
(१६)	सीरी – बंगाल	१० से १५ लिटर

क्रमांक १ से ५ का गोवंश क्रमांक ६ से १५ के गोवंश से थोडा कम दूधारु है । लेकिन उनके बैल दो से तीन गुने ज्यादा ताकतवर एवं तेज चाल के है । एवं इन गायो में तेजस्विता बहुत है। इसलिये इन गायों का दूध, घी, छाछ, दही, मक्खन मानव को भी

अधिक तेजस्विता देता है । तेजस्विता ही मानव की दिव्य शक्ति है। तेजस्विनी नारी जीजाबाई की कोंख से ही छत्रपति शिवाजी पैदा हो सकता है । गोवंश के सर्वग्राही गुणों का अध्ययन करें तो सभी गोवंश अमूल्य हैं । दूध की सिर्फ मात्रा नहीं देखनी चाहिये, उसके गुण देखने चाहिये। गाय के दूध से भी अधिक मूल्य गाय के गोबर, गोमूत्र एवं बैल का है । इसलिये ये सभी गोवंश उनके प्रदेश में अनमोल गोवंश है ।

उपर्युक्त गोवंश भारत के दूधारु एवं विश्वस्तर के श्रेष्ठ बैल देनेवाले गोवंश है । इस गोवंश के प्रदेश में गीर या किसी भी अन्य गोवंश को ले जाने से दो देशी गोवंश मिश्रित (वर्णसंकरण) होता है और लंबे समय के बाद स्थानिक अमूल्य गोवंश का नाश होता है। अत: उपर्युक्त गोवंश का मूल्य समज कर उस प्रदेश की प्रजा द्वारा अपने गाँव–प्रदेश में अपने गोवंश का पालन–संवर्धन किया जाये यही सही गोभक्ति, गोज्ञान, जन्मभूमि का स्वाभिमान एवं ईश्वर के कानूनों का पालन है । देश के अन्य प्रदेशो में जहाँ दूध देनेवाले गोवंश नहीं हैं, वहाँ स्थानिक जलवायु को अनुकूल गीर, शाहिवाल, राठी या थरपारकर किसी भी एक ही गोवंश का विकास करना चाहिये । एक ही गोशाला में एक से अधिक गोवंश साथ साथ रखने से गोसेवा के बदले गोनाश हमने सारे भारत में देखा है । गोशाला, गाँव एवं प्रदेश में एक ही देशी गोवंश का पालन संवर्धन करे । जीससे गोवंश की शुद्धता एवं गुणवत्ता रहेगी ।

३६-गो-संस्कृति-संस्कार

१. आँगन में शुद्ध उत्तम देशी गाय पालन ।

२. गो–संवर्धन के लिये गाँव में शुद्ध नस्ल का नंदी । नंदी पालन महापुण्य, नंदी–रहित गाँव अभिशापरूप ।

३. नंदीघर गाँव का प्रथम पवित्र स्थानक एवं सही धर्मस्थान ।

४. गाय के सुवर्णयुक्त दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर (पंच–गोसत्व) आधारित जीवन ।

५. गाय के गोबर–गोमूत्र–बैल आधारित कृषि

६. सुबह–शाम घर, मंदिर, आश्रम में अग्निहोत्र करे तथा गाय के घी का दीया जलायें।

७. देवों को निवेदित किये जानेवाले पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, सक्कर) में तीन पदार्थ गाय के ।

८. गाय के दूध, दही, घी की शुद्धता गोसंस्कृतिधर्म ।

९. गाय के साथ प्रेम एवं मैत्रीभाव से जीना ।

१०. गाय की चरणरज पावन और गोधूली समय शुभ मुहूर्त ।

११. नित्य प्रभातकाल में गोदर्शन एवं गोपूजन, गाय सामने मिल जाये वो शुभ शकुन ।

१२. उषाकाल से सायंकाल तक गाय का रंभारव मंगल, रात की नीरव शान्ति में सावधानी का संकेत या अमंगल चेतावनी ।

१३. शादी, शुभकार्य, त्यौहार, बालक का शालाप्रवेश या

प्रवास–यात्रा प्रयाण के समय पंचामृत के प्रसाद से शकुन।

१४. गुणशाली स्त्री, धरती, आकाशी जल की तुलना गाय के साथ ।

१५. वचनपालन के लिये गाय का प्रण ।

१६. शुभ–अशुभ प्रसंगों पर गायों के लिये दान । गोदान बड़ा पुण्य, नन्दी का दान महादान ।

१७. धर्मस्थान में गाय । साधु, संत, ज्ञानी या कर्मयोगी गाय, पंचगोसत्त्व और उत्तम नन्दी के गुणों का लोगों को बोध करते रहें । जिस गाँव में नन्दी हो उसी गाँव में निवास करें, और जिस घर में देशी गाय हो उसी घर का ही भोजन लें ।

१८. साधु, संत, ज्ञानी, कर्मयोगी या विशिष्ट अतिथियों का गाय के दूध–घी से स्वागत करे ।

१९. यज्ञ एवं शादी, हवन आदि में गाय के गोबर के गोहरे कंडे की और गाय के घी की आहुति दें ।

२०. शादी के प्रसंग पर पुत्री को गाय का दान दें ।

२१. उत्तम संतति कि प्राप्ति हेतु तथा यौवनरक्षा के लिये दंपती रात के समय शयन–वेला पर गरम किये हुए गाय के दूध का सेवन करें ।

२२. गर्भस्थ शिशु को गाय के दूध, घी का पोषण देते रहें एवं बालक का पोषण गाय के दूध–मक्खन से ही करें ।

२३. बालक के जन्म समय पर एक बूँद गाय का घी एवं एक बूँद शहद (मध) समान मात्रा में मिश्रण करके दें । वह मिश्रण बाल रोगों के सामने जीवनरक्षक औषध बनेगा ।

२४. प्रसूता स्त्री को गाय के दूध, घी, मक्खन का पोषण और गाय के गोहर के ताप का सैक करें ।

२५. प्रात: काल में गाय के घी में थोडा सा गुड एवं सोंठ डाल के हलका गरम करके पीनेसे पेट के रोगों से मुक्ति, प्रचंड ताकत एवं शतायु प्राप्ति होती है । सुबह के भोजन में गाय का ताजा दही, छाछ अमृत समान है।

२६. दोपहर को भोजन के अनन्तर गाय की छाछ का अमृतपान ।

२७. सायंकाल में गाय के दूध से भोजन उत्तम आहार ।

२८. बछड़ी या युवान तंदुरुस्त गाय के गोमूत्र का उत्तम औषध के रूप में आजीवन सेवन ।

२९. जिस भूमि पर मंदिर, धर्मस्थान, आश्रम या विद्यापीठ का निर्माण करना हो, नई भूमि पर गाँव बसाना हो उस भूमि पर पहले सवा से छह महीनों तक गायों के झुन्ड को बिठायें । यज्ञ–कथा स्थल पर एक से सात दिन गोधन बिठायें।

३०. मंदिर, घर, उद्योग, खेत में मंगल प्रवेश के समय गोपूजन एवं गाय से मंगल प्रवेश करें ।

३१. गाय आधारित जीवन एवं गोरक्षा सनातन धर्म ।

३२. मृत्युशय्या पर गाय के गोबर, गोमूत्र की लिपाई ।

३३. अग्निदाह में गाय की उपलाएँ एवं गाय के घी की आहुति ।

३४. गाय में ३३ कोटि (प्रकार के) देवों का वास (८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, १ आत्मा, १ परमात्मा)

३५. अकाल–आपत्ति में गोरक्षा और गोपालन इस भूमि का सनातन धर्म ।

३६. गाय का माता के रूप में पूजनीय स्थान ।

गाय में ३३ देवत्व :- ८. वसु:– धरती, अग्नि, जल, वायु, ध्रुव, चन्द्र, उषाकाल एवं प्रकाश जो पूर्ण पोषण देता है ।

११. रूद्र :– दश प्राण एवं एक मन, जो मानव के दश प्राणोंको पुष्ट कर, मनोबल प्रदान करता है ।

१२. आदित्य :– बारह मासों की सूर्यशक्ति गाय में है, जो जीवनशक्ति प्रदान करती है ।

१ आत्मा :– गाय का आत्मा सत्त्वगुणी है ।

१ परमात्मा :– गाय में परमात्मा का वास है ।

सृष्टि की बुनियादी शक्ति सूर्य का तेज ग्रहण करके पीठ पर डिल्ला (कांध,खांद) धारण करनेवाली गाय अपने दूध, घी रूपी अमृत से मानव को तेजस्विता प्रदान करती है। तेजस्विता ही मानव की प्राणशक्ति है, जो राष्ट्र का प्राण है ।

गो अमृत के सफल प्रयोग

१ शतायु प्रयोग : १० से २० ग्राम देशी गाय के घी या मक्खन में ५ से १० ग्राम देशी गुड एवं २ ग्राम सोंठ मिलाकर हलका गरम करके उषाकाल में पीने से पेट का वायु, कब्ज, पित्त, अपचा निर्मूल होता है । पेट तंदुरुस्त होने से शरीर के कई रोग मिटते है । एवं प्रचंड बल, शुक्राणु, कामशक्ति, धातु की वृद्धि होती है । कोलेस्टेरोल, मोटे पेट का घेराव कम होता है । हमे हजारों लोगों में इस प्रयोग का चमत्कारिक परिणाम मिला है । हमारा मंतव्य है कि, ये प्रयोग सारे विश्व के लिये अमृत प्रयोग हैं । घी की जगह मक्खन ज्यादा लाभदायी है ।

२ छाछ से रोग मुक्ति : सूबह में ताजा छाछ में १ ग्राम सोंठ मिलाकर पीने से **पान नं. ३६ छाछ विभाग** में लिखे सभी रोग निर्मूल होते है । वास्तव में देशी गाय की ताजा छाछ अमृत संजीवनी है ।

३ दूध का आहार : शाम को भोजन में देशी गाय का ताजा दूध आरोग्य, पोषण एवं शक्तिदाता अमृत है ।

४ मातृत्व की प्राप्ति : सुबह–शाम देशी गाय के दूध में १० ग्राम शतावर पावडर मिलाकर पीने से दुर्बल शरीर पुष्ट–सुडोल होता है । स्त्रियों के लिये दूध वृद्धि का एवं संतान प्राप्ति का यह सफल प्रयोग है । यह प्रयोग गर्भस्थापक एवं गर्भ पोषक है । पुरुषो की धातु, शक्ति, आयु बढाता है।

५ पुरुषत्व प्राप्ति : १०० ग्राम शतावर, १०० ग्राम भृंगराज, १०० ग्राम सोंठ, १०० ग्राम सफेद मुसली, १०० ग्राम कौंचा का पावडर बनाकर मिक्ष करे । रोज सुबह–शाम देशी गाय के गरम दूध में १०

ग्राम यह चूर्ण एवं ५ ग्राम सक्कर मिलाकर, ६ मास से एक साल पीने से पुरुषो के धातु, शक्ति, शुक्राणु, वीर्य बहुत बढता है । इस प्रयोग से पुरुषो का वंध्यत्व, नपुंसकता दूर होती है ।

६ कफ, श्वास रोग : देशी गाय के गरम दूध के साथ हर रोज सुबह खाली पेट एवं सोते समय ५ ग्राम त्रिकटु (सोंठ, कालीमिर्च, पिप्पल) का चूर्ण लेने से कफ, खाँसी, शरदी, श्वास एवं अशक्ति की समस्या दूर होती है ।

७ चिर यौवन : हररोज सोते समय १० ग्राम (एक चम्मच) देशी गाय का घी, ५ ग्राम शहद एवं ५ ग्राम त्रिफला चूर्ण मिलाकर नित्य सोते समय लेने से गले से सर तक सभी रोग, वात, पित्त, कफ, कोलेस्टेरोल मिटते है। एवं आँखो की ज्योति बढती है । आजीवन सेवन से स्त्री–पुरुष को चिर यौवन, शतायु का यह रामबाण प्रयोग हैं ।

८ निरामय जीवन : सोते समय देशी गाय के गरम दूध में थोडी सक्कर एवं १ ग्राम सोंठ मिलाकर पीने से कब्ज, वायु, पित्त (एसीडिटी), दाह निर्मूल होता है । चिरयौवन का यह सफल प्रयोग हैं ।

९ गोमूत्र : गोमूत्र केन्सर, मधुमेह (डायाबिटिस) घुटन या शरीर का वायु, त्वचारोग, कब्ज, वायु, कफ, खाँसी, श्वास एवं शरीर में अंदर–बाहर की गांठे की पृथ्वी पर की सर्वश्रेष्ठ औषधि है । हजारो दर्दिओ में हमने ये परिणाम देखे है । (विगत पाना नं. ३३)

इस प्रयोग में भेंस, जर्सी के दूध, घी, छाछ, मक्खन का कोई स्थान नहीं है । यह जानवरो के पदार्थ से उलटा परिणाम मिलेगा ।

गाय आधारित कृषि : हमने १० साल से १०० गाँवो में देशी गाय आधारित कृषि के प्रयोग किये हैं । रासायणिक खाद एवं कीटनाशक जहर से जमीन, जल तमाम खाद्य सामग्री (अन्न, फल, सागभाजी, मसाले) वनस्पति औषध, मानवजाति एवं प्रकृति की नस नस में भयानक रूप से जहर फैल रहा है । जिससे केन्सर, मधुमेह, हृदयरोग, त्वचारोग, वंध्यत्व से लेकर कई रोग भयानक रूप से फैलते जा रहे हैं । मानव की रोग प्रतिकारशक्ति शरीरशक्ति, यौनशक्ति कम हूई हैं । रसायण, जहर का यह सिलसिला चालु रहा तो मानव के साथ गोवंश, पशुधन, कीटको से लेकर पक्षियों की महत्तम प्रजाति लुप्त हो जायेंगी ।

इस विष चक्र में से छुटकारे का अेक ही उपाय है, **हमारा देशी गोवंश** । देश का हरेक किसान प्रति ५ अेकड में एक देशी गाय पाले एवं देशी गाय के गोबर, गोमूत्र एवं कृषि कचरे से सेन्द्रिय खाद बनाकर खेतो में डाले, तो जमीन की उर्वरकता का हमेशा संतुलन रहेगा एवं वृद्धि भी होगी ।

१ धरामृत : (प्रति अेकड) एक कुंडे में २५ किलो देशी गोवंश का ताजा गोबर, १०–१२ लिटर गोमूत्र एवं एक किलो देशी गुड १०० लिटर पानी में मिलाकर दो से चार दिन रखें । दिन में तीन या चार बार लकडी से धरामृत हिलाये । बाद में पियत के साथ पिला दे । प्रति १५–२० दिन पर पानी के साथ पिलाते रहें । हमारा १० साल का अनुभव है, यह खाद पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ खाद है । इस प्रवाही को दोहरे कपडे से छानकर १५ लिटर पानी में दो लिटर मिलाकर पंप से छींटकने से फसल गाढी हरी बनती है, कीटनियंत्रण भी होता

है। कोई भी कृषि फसल के लिये सर्वश्रेष्ठ प्रयोग सिद्ध हुआ है ।

२) गोमूत्र : प्रति अेकड १० लिटर देशी गाय का गोमूत्र पियत के साथ पिलाने से फसल को तमाम तत्त्वो का पोषण मिलता है और पैदावर बढती है । युरिया, नाइट्रोजन खाद से कइ गूना लाभ होंगा।

३) १५ लिटर पानी में १ से १.५ लिटर गोमूत्र मिलाकर कोइ भी फसल पर छींटक ने से कीट नियंत्रण होता है एवं फसल गाढी हरी बनती है, फल, फुल की मात्रा बढती है ।

४) २० लिटर पानी में ३ किलो नीम के पते एवं २ किलो आक (रुइ) के पत्ते हलका पीसकर डालें । १५ लिटर बचे तबतक उबाले। बाद में कपडे से छानकर प्रति १५ लिटर में १ लिटर काढा एवं १ लिटर गोमूत्र मिलाकर नियमित ८ से १५ दिन पर कोइ भी फसल पर छिंटक ने से अच्छा कीट नियंत्रण होता है एवं फसल का विकास, फल, फूल बढते है ।

५) प्लास्टिक के पीप में देशी गाय की १० किलो छाछ में ३ किलो बाजरे का आटा मिलाकर ७ दिन खाद के ढेर में पीप को गाढ दे । बाद में निकालकर लकडी से प्रवाही को हिलाकर फल, सब्जी लगाते समय खड्डे में ५० ग्राम यह प्रवाही एवं २० ग्राम तंबाकु डाल कर पौधे, बीज लगाने से जड के रोगों का नियंत्रण होता है । पौधा तंदुरूस्त होता है।

६) बीज को आधे से एक घंटे गोमूत्र में भिगोकर गाय के कंडे की राख का पुट (भावना) देकर बोने से अंकुरण क्षमता बढती है, एवं फुगजन्य रोगों का भी नियंत्रण होता है ।

७) गीली या नमी वाली भूमि मे ट्रेकटर चलाने से जमीन सख्त, चिकनी हो जाती है । जमीन के उपयोगी बेकटेरिया–किटाणु नष्ट हो जाते है एवं फसल की जडो को हवा मिलना बंद हो जाता है । जीससे जमीन एवं फसल को बहुत हानि होती है । बैल से कृषि ही सनातन सुरक्षित स्वावलंबी एवं कल्याणकारी है । भारत के किसान जागें, कंपनी एवं लोन से करजे में फसानेवाली बैंको के बहेकावे से बचें एवं अपनी आबादी, भूमिरक्षा एवं गोरक्षा हेतु बैल से ही कृषि करें ।

देशी गाय आधारित कृषि के लाभ

१ २० से १००% कृषि उत्पादन एवं चारे में वृद्धि ।

२ अन्न, फल, सब्जी, मसाले खूब स्वादिष्ठ, पोषक, टिकाउ होते है । इस से मानव को श्रेष्ठ स्वाद एवं पूर्ण पोषण मिलता है ।

३ जमीन की उर्वरकता प्रतिदिन बढती है ।

४ रसायण, ज़हर से मानवजाति, पशुधन, पर्यावरण को मुक्ति मिलती है ।

५ २० से २५% सिंचाई पानी की बचत होती है ।

६ कृषि खर्च में रासायणिक खाद एवं कीटनाशक में ८० से १००% बचत होती है । २० % में ओर्गेनिक नियंत्रक एवं तत्त्वो का इस्तमाल कर सकते है।

७ हमारे अनमोल देशी गोवंश की रक्षा होती है ।

देशी गाय जानवर नहीं है, लेकीन मानवजाति, कृषि एवं राष्ट्र की 'जान' है । देशी बैल हमारा रूषभ देव है ।

सरकारी गोवंश नीति

हमारे प्रदेश एवं देश में लुप्तता की दिशा में जा रहे गोवंश को बचाने तथा मानव, कृषि, प्रकृति एवं राष्ट्र की सुरक्षा–आबादी के लिये नयी **'देशी गोवंश सुरक्षा नीति'** बनाये ।

१) विदेशी जर्सी, होलस्टीन का वर्णसंकरण तुरंत बंद करें ।

२) जीस प्रदेश में कुदरत ने जो देशी गोवंश बनाया है, वो भूमि यह गोवंश के लिये सुरक्षित घोषित करें । यह प्रदेश में उनका ही बीजदान करे । गाँवों को शुद्ध नस्ल के देशी साँढ उपलब्ध करें ।

३) गोशालाओ, गाँवों, शहरो में घुमते बिना नस्ल के या साधारण गुणवत्ता के साँढो को बैल बनाने का कानून बनाकर अमल करें ।

४) जर्सी जानवर, भेंस, ट्रेक्टर की जगह शुद्ध देशी गाय–बैल पालन के लिये किसानो को आर्थिक सहाय करें ।

५) हरेक प्रदेश में देशी गाय का डेरी उद्योग स्थापित करें ।

६) देशी गाय आधारित उद्योगो को प्रोत्साहन दें ।

७) सरकारी कृषि केन्द्रो में **'देशी गाय आधारित कृषि'** विभाग प्रारंभ करे । किसानो को देशी गाय आधारित कृषि के लिये विशेष सहाय योजना बनायें ।

भारतीय गोवंशरक्षाका मूलाधार-प्राणवान प्रजा :

मनुष्य का शरीर–सशक्त एवं तन्दुरुस्त हो, मन–पावन, अभय एवं अचल हो, बुद्धि, ज्योतिस्वरूप सत्त्वगुणी हो, हृदय प्रेमपूर्ण एवं करुणामय हो वह मनुष्य प्राणवान है । प्राणवान मनुष्य ही सामने आनेवाले सत्य का अमल कर सकता है । असत्य का सामना कर सकता है, प्रश्नों को जड मूल से उखाड सकता है, अपने–परिवार का, गाय का–गाँव का, संस्कृति का एवं राष्ट्र का रक्षण कर सकता है । प्राणवान मनुष्य को ही जिंदगी की सच्ची अनुभूति होती है । प्राणवान मनुष्य ही सुख–समृद्धि का निर्माता एवं उत्तम वंश का जन्मदाता बन सकता है । जगत के महान संशोधन–परिवर्तन–सर्जन का मूल प्राणशक्ति ही है । प्राणशक्ति ही सर्वरक्षक, सर्वसुखदाता, आनंददाता, महानिर्माता एवं प्रभुप्राप्ति का मूलाधार है । प्राणवान प्रजा का ही संसार में दिग्विजय होता है ।

धर्म–उपासना–त्याग–तप–मोक्ष के नाम पर मनुष्य के शरीर–मन–बुद्धि–हृदय की शक्ति क्षीण करना यह मनुष्यनाश, संस्कृतिनाश, राष्ट्रनाश एवं जगत की अधोगति का महापाप है । प्रचंड प्राणवान मनुष्य प्रश्नों को जड़मूलसे उखाड़ने के लिए अकेला ही कटिबद्ध होता है । अपने आपको समर्पित करके अज्ञात दुर्गम पथ पर अभय अचल कदम रखता है, स्वयं महापुरुषार्थ करके दिशा विहीन या हताश जनसमूह में प्राणसंचार करके सबको नये मार्ग पर ले जाता है । हमारी जलक्रांति एवं गीर गाय क्रांति, देशी गोवंश–गोसंस्कृति रक्षा महाअभियान इसी मार्ग

का सर्जन है । प्राणशक्ति शुद्ध हवा, देशी गाय के दूध–घी–मक्खन–छाछ, ज़हरिले केमिकलों से रहित ताजे प्राकृतिक तथा गाय के गोबर–गोमूत्र से, पके हुए अन्न–फल–शाग में से योग–परिश्रम से तथा सद्–दर्शन, सत्–चिंतन, संवाद–सत्संग, सत्कर्म से ही प्राप्त होती है । जो माता, पिता या गुरु (प्रेरक) प्राणवान होते है, उनकी छत्रछाया में ही प्राणवान पीढ़ी का निर्माण होता हैं । हे भारतभूमि की माताओ, तुम्हारी कोंख में प्राणवान प्रजा का अवतरण हो । क्योंकि वही भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्र कि रक्षा करेगी एवं उसे उन्नत शिखर पर ले जायेगी । किसी भी प्रश्न के हल का मूलाधार एवं ऐश्वर्य या पूर्णत्वकी प्राप्ति का मार्ग प्रचंड इच्छाशक्ति, संकल्प शक्ति, शुद्ध गहरा ज्ञान, पूर्णप्रेम, महाकर्म, अभय,निरंतर समर्पित कर्मभक्ति में समाविष्ट है । कुदरत की अमूल्य भेंट उत्तम गोवंश निर्माण एवं रक्षा का यही मार्ग है । गाय सिर्फ पुण्य कमाने का, सेवा का या पापमुक्ति का साधन नहीं है । परन्तु जीवन देनेवाली कामधेनु है । इस सत्य को अपने जीवन में और राष्ट्र में चरितार्थ करें । पूरे भारत में उत्तम नस्ल के देशी गोवंश निर्माण का संकल्प करें । गोवंश का गहराई से शुद्ध ज्ञान प्राप्त करें, गाय के साथ हृदय–जीवन और परिवार को जोड़ कर उस के सह अस्तित्व को पाएँ । चाहे वैसे कठिन काल में उत्तम नस्ल के देशी गोवंश की रक्षा को सच्चा गोधर्म–ईश्वरधर्म एवं राष्ट्रधर्म समझें । उत्तम साँढ का मूल्य १०० उत्तम गायों समान समझे । उत्तम नंदि का परीक्षण, संवर्धन एवं पालन को गोरक्षा तथा उत्तम गोवंश निर्माण का मूलाधार समझ कर प्रत्येक गाँव में अमल करें । भारत के

दूधारु एवं उत्तम बैलों को देने वाले गोवंश की रक्षा कर के श्रेष्ठतम नस्लवाले गोवंश का निर्माण करें । ३६ गोसंस्कृति संस्कारों का अमल करके देश मे गोसंस्कृति को उन्नत शिखरों पर ले जायें । हे भारत के वीरो ! यही सच्ची गोभक्ति, प्रकृतिभक्ति, ईश्वरभक्ति और राष्ट्रभक्ति है । अपनी प्राणशक्ति को पूर्ण रूपसे प्रकट कर के अपने हाथों से ही भारतभूमि को उत्तम देशी गोवंश की भूमि बनायें । प्राणवान मानव के रूपमें ७५ साल का यौवन एवं १०० साल का कार्यरत जीवन जीने का संकल्प करें।

केवल जलसंकट या गोवंश–गोसंस्कृति की लुप्तता का ही नहीं, अन्य हजारों प्रश्न क्यों न हों, उनके हल के लिए में निरंतर अभय एवं अचल कदम उठा रहा हूँ, क्योंकि मुझे अपनी प्राणशक्ति तथा ईश्वर में पूर्ण श्रद्धा है।

वैदिक वाक्य : वीर भोग्या वसुंधरा–प्राणवान (वीर) ही वसुंधरा का उपभोग करता है ।

जागो, व्यसन से युवान पुत्र मर जायेगा और पुत्री भी विधवा होगी...

पुत्र डॉक्टर, इंजीनियर या बडा उद्योगपति नहीं बनेगा तो मर नहीं जायेगा । लेकिन व्यसन से मर जायेगा । भारत में प्रतिदिन तंबाकू से ३००० एवं शराब से लोगों की मृत्यु हो जाती है । व्यसनी

पुरुषत्व, ताकत, रोग प्रतिकारशक्ति, दाँत, सौन्दर्य, व्यक्तित्व अच्छे लोगों से मित्रता एवं दांपत्यसुख गँवा कर जिन्दालाश के समान जीवन जीता है और अचूक अकाल मृत्यु का शिकार बनता है । मरते मरते परिवार को बरबाद करता जाता है । देश की गरीबी, गुन्हाखोरी, परिवार–गाँव में अशांति, झगडे का प्रधान कारण शराब, तंबाकू है । यदि हम नहीं जागेंगे तो शराब–तंबाकू का ज़हर परिवार एवं देश का भक्षण कर जायेगा । और हमारे घर से ही युवान पुत्र की या दामाद की अर्थी उठेगी ।

जो परिवार या राष्ट्र व्यसनमुक्त हो, उसकी समृद्धि दुगुनी और सुखशान्ति अनेक गुनी हो जायेगी । टेक्स के लिये व्यसन को प्रोत्साहन यह सरकार का अज्ञान एवं प्रजाद्रोह है । **तंबाकू-शराब के टेक्स से नहीं, निरव्यसनी, नीरोगी और प्राणवान प्रजा से राष्ट्र सुखी, समृद्ध एवं सुरक्षित बनता है ।**

व्यसन मुक्ति की रीत : गाय के उपर हाथ रखकर या अपने आस्था केन्द्र में जाकर व्यसनमुक्ति का संकल्प करे । व्यसन छोडने से कब्ज या सरदर्द हो तो थोडे दिन रात को गरम पानी के साथ एक चमच एरंड तेल, त्रिफला या रेचक चूर्ण लेने से पेट साफ रहेगा । नीम के दांतुन का आधा इंच का टुकडा धीरे धीरे चबाना । और तिल, सोंफ, इलायची या आँवला चबाने से थोडे दिनो में व्यसन छूट जायेगा और दाँत भी मजबूत हो जायेंगे । इस रीति से हमने ५००० लोगों के व्यसन छुडवाये हैं ।

सावधान : यदि शिक्षित युवक–युवतियाँ गोपालन, गोदोहन का काम न सीखें तो, इसी एक ही भूल से समग्र देश में से आँगन में से गाय लुप्त हो जायेगी । साथ साथ गाय के दूध, घी, छाछ और गोबर, गोमूत्र से पके हुए पोषक अन्न का स्थान मांसाहार, अंडे, ज़हरीले पीने और हानिकारक बाजारु पदार्थ लेंगे । इस परिस्थिति से मानव–आरोग्य, उत्तमवंश, गोसंस्कृति, नैतिक मूल्य (धर्म), कृषी एवं राष्ट्र का पतन हो जायेगा । हे युवको, आँगन में गाय के अस्तित्व का मूलाधार गोपालन, गोदोहन संस्कार है । यही गोभक्ति एवं राष्ट्रभक्ति का दिव्य कर्मयोग है । इस धर्म को श्रीकृष्णने जीवनसात् किया, हम भी उसके अनुसार जीवन गुजारें । उनमे जीवन प्राप्ति गोभक्ति एवं श्री कृष्ण की भक्ति है । गाय, संस्कृति एवं, राष्ट्र के उपासक माता–पिता, अपने संतानो को गोपालन, गोदोहन, गोसंवर्धन का कर्मयोग सीखाये ।

नारीधर्म :

मैं आँगन में उत्तम नस्ल की गाय का पालन करूँगी, स्वयं गोदोहन करके मेरे पति और संतानों का पोषण करूँगी । क्योंकि पति, संतान और राष्ट्र ही मेरा सर्वस्व है ।

उत्तम वंश को उत्पन्न करके निर्माण करनेवाली माता परिवार, संस्कृति एवं राष्ट्र की धरोहर है ।

शतायु जिंदगी : वेद कहेता है, प्रत्येक मनुष्य को १०० साल जीने की कामना करनी चाहिये एवं आयु में वृद्धि हो सकती है ।

अत: मृत्यु के लिये तिथि निश्चित होती है, उसमे परिवर्तन नहीं किया जा सकता, ऐसी खोखली बातों को मानकर व्यसन करना, चाहे जो वस्तु खाना और आरोग्य, जिंदगी की उपेक्षा करना यह सिर्फ अज्ञान और मानसिक दुर्बलता है ।

ज्ञान तथा इच्छा ही सर्वप्राप्ति का मूल है । अत: ज्ञान, शुभ इच्छा, संकल्प और पुरुषार्थ द्वारा श्री (धर्म, अर्थ, काम, सौन्दर्य, श्रेष्ठता) आरोग्य, आयु, उत्तमवंश, धन, विजय, कीर्ति, आनंद और ऐश्वर्य प्राप्त किये जा सकते है ।

उषाकाल में गाय के गरम किये हुए मक्खन या घी में गुड-सोंठ लेना । सुबह मे गाय का ताजा दहीं, छाछ और सायं गाय का ताजा दूध अमृत समान है । यह अमृत पीनेसे १०० वर्ष की नीरोगी आयु प्राप्त होती है । गाय का धारोष्ण दूध १०० वर्ष का यौवन प्रदान करता है । गाय का पीयुष पीकर श्रीकृष्ण १२५ साल युवान स्वरूप में जी सके थे ।

आत्मजागृति ही सर्व सुख का मूल है । यदि आत्मजागृति हो जाये... तो पुराना व्यसन छोड सकते है, आहार-विहार की भूलों एवं पापकर्म से मुक्ति मिल सकती है, ५० साल के बाद पुन: पूर्ण आरोग्य-यौवन प्राप्त करके, सो साल नीरोगी कार्यरत जीवन जी सकते हैं ।

हे भारतवासियो, आओ जिंदगी जीलें । श्रेष्ठतम देशी गोवंश एवं सुवर्णभूमि भारत का निर्माण करें ।

गो मंत्र

हे गो मात:,
त्वया मम देशवासिनाम्
शरीराणि वज्र समानानि,
मनोबलम् सिंह सद्रुशम्,
बृद्धि: सूर्य सद्रुशी,
हृदयं गंगा तुल्यम् तथा च
आत्मा परमतत्त्व पूंजताम् कल्प्यन्ताम् ।।

हे गाय माता,
तेरे द्वारा मेरे देशवासियों के शरीर वज्रसमान,
मनोबल सिंह समान,
बुद्धि सूर्य समान,
हृदय गंगा समान और
आत्मा परमतत्त्व का तेजपूंज बन जाओ ।

परमात्मा का साक्षात्कार : जीवन के प्रत्येक कर्म का हेतु आनंद प्राप्ति है । जन, जल, उत्तम औलाद की देशी गायें, जीवसृष्टि और जगत का गुणदर्शन तथा उसके प्रति सद्‌भाव, संवेदना, संवाद, सहजीवन एवं सत्कर्म से हमको सकल जगत के सत्त्व के साथ एकत्वभाव और निरंतर ब्रह्मानंद की अनुभूति हुइ है। मुझे लगता है कि सकल जगत के कण–कण में समाये हुअे परमात्मा का यही सच्चा साक्षात्कार है ।

अहो ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद ।

-मनसुख सुवागीया

मनसुखभाई सुवागीया लिखित साहित्य

- **गोवेद** ग्रंथ – गुजराती
- आरोग्य दाता देशी गाय – हिन्दी
- गाय–आधारित कृषि–विषमुक्त जिन्दगी – गुजराती
- वसुन्धरा का वैभव – गुजराती
- स्त्री उपनिषद् – गुजराती

मनसुखभाई सुवागीया एवं जलक्रान्ति ट्रस्ट का ध्येय

(१) १० लाख उत्तम औलाद की गीर गायों का निर्माण

(२) ५ लाख उत्तम औलाद की कांकरेज गायों का निर्माण

(३) लुप्त हो रहे भारत के अनमोल १५ देशी गोवंश की पुन: संपन्नता ।

(४) भारत में से विदेशी जर्सी/होलस्टिन (एच. एफ) प्राणियों को देशनिकाल करना ।

(५) देश के हर गाँव में चेकडेम–तालाब–खेत–तालाब की स्वावलंबी जलयोजना साकार हो।

(६) रासायणिक खादों–विषैले तत्त्वों से मुक्त; देशी गाय आधारित कृषि ।

(७) देशी आम के पेड, देशी फल, सागभाजी, अनाज, मसालों की उत्तम जातियों का रक्षण एवं संवर्धन ।

(८) भारतीय संस्कृति की सुरक्षा ।

(९) व्यसनमुक्त प्राणवान प्रजा से सुवर्णभूमि भारत का निर्माण ।

गोमाता–भारतमाता की उन्नति के इस महाकार्य में तन–मन धन से संमिलित होने के लिये आपको अनुरोध है। हम सब मिलकर ये भगीरथ कार्य को सफल करेंगे । हमारी इच्छाशक्ति, संकल्प, समर्पण एवं महापुरुषार्थ से ये अवश्य होगा ही होगा ।

भारत की क्षितिज पर क्रान्ति का सूर्योदय

वर्तमान युग में सारे भारत में जल समस्या का विकराल प्रश्न उत्पन्न हुआ । तब गाँव में जन्म लेनेवाले और केवल १२वीं कक्षा तक पढे हुए किसानपुत्र मनसुखभाई सुवागीया ने प्रकृति एवं परमात्मा की सीधी प्रेरणा से पाँच सिद्धान्तोंवाली नई जल योजना बनाई । (१) ग्राम संगठन (२) लोक फंड (३) श्रमदान (४) चेकडेम–तालाब की सुयोग्य स्थान पसंदगी (५) चेकडेम की सरल, सस्ती–टिकाउ नई डिझाइन । इस योजना अनुसार जूनागढ जिले के जामका गाँव में सरकारी सहायता के बिना ५१ चेकडेम एवं २ तालाब बनाकर देश का प्रथम जल स्वावलंबी गाँव बनाया । इस सिद्धांत के अनुसार १०० गाँवों में जलयोजना को साकार करनेवाले वे देश एवं विश्व के प्रथम व्यक्ति है । लोगों को प्रेरणा देने के लिये, गाँव गाँव संमेलन करके जलरक्षा का संकल्प करवाया है। गाँव गाँव में लोक फंड का प्रारंभ उन्होंने ही किया और उस योजना के श्री गणेश अपने से ही किया । ग्रीष्म की ऋतु में धूप में दिवसों से लेकर महीनों तक और शीत की भयानक ठंडी में सायंकाल से लेकर बडी सुबह तक लोगों के साथ श्रमदान किया है। गुजरात सरकारने जामका योजना को देखकर नई जलरक्षा योजना बनाई । दिनांक २०–११–९९ के जलक्रान्ति दिन पर स्वामी श्री सच्चिदानंदजीने चेकडेम अभियान को देश की पाँचवीं क्रान्ति, जामका गाँव को जलक्रांति की जन्मभूमि और **मनसुखभाई को**

देश की जलक्रांति के प्रणेता रूप में सन्मानित किया ।

जलरक्षा के कार्य दरमियान गाँव गाँव में देशी गोवंश का नाश देखकर, प्रारंभ में १००० गाँवों में घूमकर गाय के नाश के कारणों की खोज की । चार वेद, उपनिषद्, धर्मग्रंथो, आयुर्वेद के ग्रंथो और लाखों लोगों के आरोग्य का अभ्यास स्वयं करके गोवेद के १४ कामधेनु सूत्र की **गीर गाय हमारे आँगन में** योजना का जामका से प्रारंभ किया । जामका को इस योजना का देश का प्रथम मोडेल गाँव बनाया । गाँव गाँव में जाकर इस योजना को साकार किया । जामका से ही गाय आधारित कृषि का प्रारंभ किया । दिनांक १–२–२००४ के दिन जामका में गो–क्रान्ति दिन मनाया । विश्व वंदनीय संत श्री मोरारिबापू एवं अन्य महानुभावोंने मनसुखभाई को **गीर गाय क्रान्ति के प्रणेता** के रूप में सन्मानित किया । मनसुखभाई के सहि कर्मयोग से लुप्तता की कगार पर पहूंचा गीर गोवंश आबाद हूआ । उन्होने सेवा का साधन बनी हूई गाय को कामधेनुं सिद्ध किया । मनसुखभाई की ये नयी राह पर कदम रखकर भारत के लोग देश के सभी गोवंश को सुरक्षित आबाद कर सकते है । कर्मभक्ति के तप से मनसुखभाईने गाय विषयक महान ग्रंथ की रचना की। उस ग्रंथ को ऋषिपुरुष निरंजन राज्यगुरु एवं संत श्री मोरारिबापूने **गोवेद** नाम दिया ।

१५ साल की कर्मयात्रा में देश के ३००० से अधिक गाँवों में जाकर करोडो लोगों को जलरक्षा, देशी गोवंशरक्षा, गाय आधारित कृषि, और व्यसनमुक्त प्राणवान जिंदगी की नयी राह दिखाइ है । ईश्वर द्वारा प्रदत्त दिव्य आत्मज्ञान, महापुरुषार्थ, निष्काम कर्मभक्ति और जीवन समर्पण से भारतभूमि को जलक्रान्ति, गीर गाय क्रान्ति, गाय आधारित कृषि और गोवेद प्रदान किया है। ये योजनाएँ और गोवेद सुवर्णभूमि भारत की क्षितिज पर क्रान्ति का नया सूर्योदय एवं सुवर्ण ईतिहास है ।

सनत महेता
पूर्व वित्तमंत्री–गुजरात

सारे जहाँ में अच्छा फ्लोटेक पंप हमारा

१. **0.5** से **100 HP** के **1100** मोडेल, **ISI**, **5 स्टार** मान्य पंप।
२. उच्चगुणवत्ता क्षेत्र में गुजरात, भारत सरकार, रेल्वे एवं **ISO** प्रमाणित कंपनी।
३. **V4** में **25** फिट हेड, **V6** में **60** फुट हेड जन्मदाता कंपनी ।
४. हरेक पंप की कार्यक्षमता **ISI** से **20** से **35%** ज्यादा ।
५. **ISI** आधारित टेस्ट में **10** नामांकित कंपनी के पंप में हेड एवं पानी में **प्रथम** फ्लोटेक पंप ।
६. बिजली बचत में **5** स्टार – फ्लोटेक पंप
७. सबसे कम रिपेरींग खर्च – फ्लोटेक पंप
८. भारत में सबसे लंबी आयु का पंप – फ्लोटेक पंप

संशोधक इंजीनियर

किशोर रादडिया — डिरेकटर–फ्लोटेक पंप

विनोद आसोदरिया — डिरेकटर–फ्लोटेक पंप

फ्लोटेक®
सबमर्सिबल पम्पसेट